बारहवाँ अध्याय।

वालेसकी फ्रान्स यात्रा।

स्काटलेण्डमें पांच वर्षके लिये सन्धि हुई। अब वालेसने एक बार फ्रांस देखनेका विचार किया। इरादा है कि फ्रांस की भीतरी अवस्था देखकर स्काटलेण्डकी भीतरी उन्नति करना चाहिये। इसी इरादेसे वह सिर्फ पचास आदमियों सहित सन् १२९८ ईस्वी की ता०२० अप्रैलको फ्रांस रवाना हुआ। पार्लीमेन्टसे अनुमति लेनेमें उज्र उठनेका ख्याल करके उसने चुपचाप यात्रा करदी। छिपकर जानेका एक यहभी कारण है कि स्काटलेण्डमें उसके न रहनेका समाचार पाकर कहीं एडवर्ड सन्धिका नियम तोड़ चढ़ाई न करदें या अपने जंगी जहाज भेजकर उसे गिरिफ्तार न करालें।

अनुकूल हवा पाकर जहाजकी पालें मानो हवासे बातें करने लगीं। एक दिन और एक रात योंही बीती इतनेमें दूरसे सोलह जहाज बड़ी तेजीसे आते दीख पड़े। वालेसने तुरन्त साथियोंको कमर कसकर तय्यार हो जाने का हुक्म दिया। यह जहाज फ्रांसके लांगविल शहरके टामस नामक एक आदमीके थे। टामस किसी बड़े आदमीकी हत्याके अपराधमें देशसे निकाल दिया गया था। तबसे वह समुद्री डाकू बन गयाथा। वालेस कोभी उसने अपना शिकार बनाना चाहा था लेकिन कामयाब न हुआ।

टामसने इस नयी पेशेमें नया नाम पायाथा। समुद्री यात्री उसे लाल रीवर कहते। लाल रीवर जहाज दौड़ाकर वालेसके जहाज की बगलमें आ पहुंचा। जहाज ज्योंहीं बगलमें आकर खड़ा हुआ त्योंही रीवर एक छलांग मारकर वालेसके जहाजपर कूद पड़ा। वालेस खड़े होकर इसीकी बाट देखताथा ज्योंहीं रीवर कूदा वालेस ने उसका गला पकड़कर ऐसा धक्का मारा कि उसके मुंह और नाक से खून गिरने लगा। देखतेही देखते रीवरके सोलहों जहाजोंने

आकर वालेसका जहाज घेर लेनाचाहा। किन्तु वालेसका पोताध्यच्च क्राफोर्ड फौरन पाल चढ़ाकर दूरतिक निकलगया और उनको बहुत पीछे छोड़गया। अब रीवरने लाचर होकर वालेससे चमा मांगी। वालेस ने चमा तो की किन्तु उसके हाथमें जो तलवार और छुरी थी वह लेकर उसे निरस्त्र कर दिया और शपथ कराई कि वह कभी उसका कुछ नुकसान नहीं करेगा। इधर रीवरके आदमी बराबर गोले गोलियां बरसा रहेथे। वालेसके आदेशसे रीवरने उनको मना कर दिया। दोनों दलमें शान्ति होगई। टामसने वालेसको रचेलतक पहुंची आना चाहा। अङ्गरेजों के आक्रमणके भयसे वालेसने मंजूर किया। राहमें दोनोंमें परिचय हुआ। टामसने अपना हाल सुना कर कहा—'आजतक मुझे कोई परास्त नहीं कर सका था। मेरा विश्वास है कि स्काटलेन्डके उद्धारकर्त्ता वालेसके पास मैं हूं।' टामसने जब जाना कि उसका विश्वास ठीक है तब उसने घुटना टेक कर स्काटलेन्ड और वालेसके कार्ममें जान देदेनेकी प्रतिज्ञा की। वालेसने उसका हाथ धरकर उठाया और फ्रांसनरेशसे उसके लिये माफी मांगनेका वादा किया।

उन दिनों लालरीवरके नामसे लोग थरथर कांपते थे। जब जहाजोंका झुण्ड रचेलबन्दरके पास पहुंचा तब नगरनिवासी रीवर के जंहाज पहचान कर बहुत डरे और आक्रमण रोकने या भागने को तय्यार होनेके लिये लड़ाईका बाजा बजाने लगे। यह देखकर वालेसने आज्ञा दी कि मेरे जहाजके सिवा और कोई जहाज बन्दर-गाहमें न जाय। वालेसके झण्डे पर स्काटलेन्डका लाल शेर बना हुआ था। वहि चिन्ह देखकर सबने अनुमान किया कि स्काटलेन्ड के आदमी आये हैं। उन दिनों फ्रांससे स्काटलेन्डकी दोस्ती थी इसलिये उन्होंने जहाजके यात्रियोंको आदरसे ग्रहण किया। वह लोग नहीं जानते थे कि स्काटिश गवर्नर स्वयं वालेस उनका अतिथि है तो भी उसके आदर सत्कारमें कुछ कमी न हुई। वालेसने टामस और दूसरे साथियों सहित राजधानीकी धावा की। पेरिस नगरमें

राजा और रानीने उसका और उसकेसाथियोंका बड़े आदरसे स्वागत किया। सब एकटक स्काटिश वीरकेसरीको देखने लगे। भोजनादि के बाद राजा और उनके सभासद वालेसके साथ दरबारमें गये। यहां वहांकी बहुतसी बातें होनेके बाद राजाने ताज्जुबसे कहा कि वालेस लालरीवरसे क्योंकर बच गये हैं। वालेसने उनसे रीवरका पूरा हाल बयान किया और उसके लिये क्षमा मांगी। फ्रांसनरेशने वालेसकी खातिर रीवरको माफ किया और वहीं उसको नाइटका खिताब दिया। तबसे रीवर और उसके सब साथी डकैती छोड़कर सच्चे नागरिककी तरह फ्रांसमें रहने लगे।

यों तीस दिन राजाकी मेहमानीमें बीते। वालेस बेकार बैठे बैठे उकता गया। अङ्गरेजोंका गाइन प्रदेशमें रहना सुनकर राजासे बिदा हो वालेस उधरही चला। देखतेही देखते चारोंओरसे नौ सौ स्काच उसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। आस्ट्रियाके अत्याचार से जैसे इटली निवासी एक समय पृथिवीके चारोंओर जाछिपे थे वैसेही इङ्गलेन्डके जुल्मसे उस समय स्काट अनेक देशोंमें फैल गये थे। गैरीबाल्डी जहां इटलीका तिरङ्गा झण्डा उड़ाता वहीं असंख्य इटालियन उसके नीचे आखड़े होते। गैरीबाल्डीकी तरह वालेसको कभी आदमीकी कमी न होती। गैरीबाल्डीकी तरह वह भी नाम मात्रकी सेना लेकर विराट शत्रुसेनाका सामना करता और प्रायः हरबारही जीतता। दोनों रणमें अजेय थे। आज वालेस वही नौसौ सेना लेकर बड़ी भारी अङ्गरेजी सेनाके सामने आया। मानो शेरोंका झुण्ड भेड़ोंके झुण्ड पर टूट पड़ा। बेशुमार अङ्गरेज उन लोगोंकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेजोंके अच्छे अच्छे किलों पर वह दखल जमाने लगे। उस प्रदेशमें अङ्गरेजी हुकूमतकी जड़ में कुल्हाड़ी चलाने लगे। वालेसने सरटामस लांगविलके सिवा और किसी फरासीसीको साथ नहीं लिया। मगर फ्रांसनरेशने उसकी कामयाबीसे उत्साहित होकर बीस हजार सेना सहित ड्यूक आफ अरलिंसको उसकी मदद पर भेजा। वह वालेससे मिलनेके लिये

गाइन प्रदेशके बीचसे बड़ी फुर्तीसे रवाना हुए। इधर कैलेके किले-दार-अर्ल आफ ग्लास्टर स्काच सेनानायकके इन सब कामोंकी खबर लेकर इङ्गलेन्ड गये। एडवर्डने क्रोधसे अधीर होकर वालेसकी गैरहाजिरीमें स्काटलेन्ड पर चढ़ाई करनेका विचार किया। एडवर्ड जो सोचते थे वही करते थे। ग्लास्टर स्थल सेनाके सेनापति होकर चले। सर जान सिवर्ड जहाजी सेनाके सेनापति होकर तरीके रास्ते रवाना हुए। देशद्रोही विश्वासघातक सर आमिर डी वालेंस घोड़े पर सवार हो स्थलसेनाका पथप्रदर्शक बनकर चले। स्काट लोग सन्धि पर विश्वास करके बेफिक्र होकर घरके काम धन्धोंमें लगे थे। शत्रुसेनाकी खबर मिलते मिलते कितनेही किले शत्रुओं के हाथमें चले गये। यह सब किले बोथवेलको दिये गये। उत्तरमें डन्डी और सेन्टजानस्टन अङ्गरेजोंके हाथ आगये। फाइफ उनकी अधीनतासे एकदम अलग नहीं था। सारांश यह कि चिवियटसे समुद्र तक समूचा दक्षिण प्रदेश अङ्गरेजोंके अधीन होगया। पश्चिम भी नहीं छूटा। दक्षिण प्रदेशके अधीश्वर स्टुआर्टकी मृत्यु होजानेसे उसका नाबालिग लड़का वाल्टर जान लेकर आरन नगरको भाग गया। आत्मरक्षाके लिये रिकार्टनके एडम, क्रेगके लिन्डसे रचलीनमें और सर जान ग्रेहम क्राइडबनमें जाछिपे। राबर्ट बायड भी आत्म-रक्षाके लिये छिपे रहे। जब सिवार्डने सर आमिर ब्राइनको फाइफ का शेरिफ नियत किया तब लुन्डिनके रिचार्ड बड़ी विपदमें पड़े। शत्रुओंसे सन्धि करना भी नहीं चाहते और टे नदी पार होनेका भी सुबीता न था। क्योंकि उस पारमें अङ्गरेज दखल जमाये बैठे थे। और उपाय न देखकर उन्होंने ग्रेहमसे मिलनेका विचार किया। सिर्फ अठारह साथी और बालबच्चे लेकर रातको स्टर्लिंग पुल पार करके ग्रेहमकी खोजमें डनडफ मूरकी तरफ रवाना हुए और उसके गुप्तस्थानका पता पाकर उधरही चले। सर जान ग्रेहम भी उनके आनेकी खबर पाकर गुप्तस्थान छोड़कर आमिले। उनलोगोंके आनन्दका पार न रहा।

उन्होंने सुना कि सर आमिर डी वालेंसने बोथवेल किलेमें शराब और रसदका ढेर लगा रखा है। यह सुनकर उन्होंने सिर्फ पचास सैनिक लेकर उस किले पर आक्रमण किया। किलेकी रक्षाके लिये सर आमिरके मातहत अस्सी आदमी थे। स्काट उनमेंसे ६० को मारकर किलेका माल लेकर चल दिये। उनके ५ आदमी उस लड़ाईमें मारे गये। उन्होंने अब वहां रहना उचित न समझकर रातके समय अर्ल मलकमकी तरफ कूच किया। मलकम उनकी सहायतासे लिनक्स किलेकी रक्षा करने लगे।

इधर और और जागीरदारोंने अपनेको लाचार देखकर वालेस की खोजमें दूत भेजा। दूत ढूंढ़ता ढूंढ़ता समुद्र पार फ्लान्डर्समें आपहुंचा। वहां सुना कि वालेस गाइन प्रदेशमें है। दूत उधर ही दौड़ा और उसने वालेसके पास जाकर अङ्गरेजोंका सब अत्याचार कहा। वालेस अङ्गरेजोंके विश्वासघातसे बहुत क्रुद्ध हुआ और बिदा होनेके लिये फ्रांसनरेशके प्रासादमें गया। फ्रांसनरेशने उसे बिदा देनेसे बहुत रोका मगर वालेसने जब फिर आनेका वादा किया तब लाचार उसे विदा दी; कहा कि वालेस अगर कभी स्वदेश छोड़कर फ्रांसमें रहना चाहेंगे तो फ्रांसनरेश उन्हें चाहे जिस स्थानके लार्ड बना सकेंगे।

वालेस उनसे बिदा लेकर अपने सहचरों और सर टामस लांगविल सहित जहाज द्वारा मनरोज हेवेन नामक वन्दरगाहमें आकर उतरा। उसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। चारों ओरसे उसके लड़ाकू साथी आकर उससे मिलने लगे। सर जान रामजे रुथवेन वाला आदि सेना सहित बर्नमबनमें जाकर उससे मिले। सब सेनाने वहीं छावनी डाली।

१२९८ ईस्वीके अगस्त महीनेमें यह मिलन हुआ। सबसे पहले सेन्ट जानस्टन किला दखल करनेका प्रस्ताव हुआ। रातको वह लोग टे नदीकी तरफ जाकर सड़कके किनारे जङ्गलमें छिप रहे। अङ्गरेज नौकर घास लानेके लिये ६ छकड़े लेकर जारहे थे वालेसने

कई साथियों सहित झट जङ्गलसे निकलकर छकड़े छीन लिये। वह लोग नौकरोंको कतल करके उनकी पोशाक पहनकर घास लाने चले और घास काटकर छकड़ोंके भीतर १५ हथियारबन्द आदमियोंको छिपा ऊपरसे घास रखकर किलेको लौटे। पहरेदारोंने बेखटके उन्हें किलेमें जाने दिया समझा कि यह तो अपने ही घसियारे हैं। किलेमें घुसतेही सशस्त्र जवान घासमेंसे निकलकर जमीन पर कूद पड़े। वालेसने उन्हें साथ लेकर दरवाजेके पहरेदारोंपर आक्रमण किया। उनलोगोंके मारेजानेपर द्वार उनके हाथमें आगया। इसी बीचमें सर जान रामजे बाकी स्काच सेना लेकर किलेमें घुस आये। बातकी बातमें किलेके सब सिपाही मारे गये या भाग गये। कुछ टे नदीमें कूदकर डूब मरे। दुर्गाध्यक्ष सर जान सिवार्डने बड़ी मुश्किलसे मेथडेन वनमें जाकर शरण ली। कोई चार सौ अङ्गरेज मारे गये। १४० ने भागकर प्राण बचाये। वालेसने सर जान रामजेको कप्तान और रुथवेनको शेरिफ बनाकर फाइफकी तरफ कूच किया ; कह गया कि अगर इधर अङ्गरेज आक्रमण करें तो फौरन मुझे खबर दीजाय। स्काचोंको सेन्ट जानस्टनमें बहुत माल असबाब मिला था इससे वह कुछ दिन आराम से रहे।

इधर वालेसके फाइफकी तरफ रवाना होनेकी खबर पाकर सिवार्ड डेढ़ हजार सेना सहित ब्लैक आयरन साइड नामक स्थानमें उसकी बाट देखने लगा। सेनाकी संख्या अधिक देखकर स्काट पहले तो बहुत डरे। वह सेन्टजानस्टनमें भी खबर न भेज सके क्योंकि अङ्गरेज रास्ते की निगरानीमें थे। इस हालतमें वालेसने वहीं एक समरसभा की। सभामें बहुत कुछ वादाविवाद हुआ, बहुतोंने बहुत तरहकी रायदी किन्तु वालेसने कहा कि जान पर खेलकर लड़नेके सिवा दूसरा उपाय नहीं है। बहुत कुछ वितण्डे के बाद वालेसकी राय मंजूर हुई। वालेसके उत्साहसे जोशमें आकर स्काटोंने युद्धमें जय लाभ करनेके लिये प्रतिज्ञा की। उन्होंने

बनमें घुसकर वृक्षोंकी ओटमें डालियां गाड़कर एक मजबूत किला बना लिया। किला अभी पूरा नहीं बना था कि सिवार्ड ससैन्य उन पर टूट पड़ा। अङ्गरेजसेनाने दो हिस्से होकर दो तरफसे किले पर हमला किया। एक हजार सेना सिवार्डके और पांच सौ सर आमिरड्डी वालेन्सके अधीन थी। दोनों तरफसे आक्रमण रोका गया इससे बेशुमार अङ्गरेज मारे गये। अन्तमें अङ्गरेज सेनापतिने किला घेरनेके इरादेसे आठ सौ सेना लेकर सारा जङ्गल घेर लिया और किले पर हमला जारी रखनेके लिये सात सौ सेना सहित वालेंसको छोड़ गये। आज्ञादी कि अगर आप वालेस को पकड़ेंगे तो एडवर्ड आपको फाइफका अर्ल बना देंगे।

दोनों अङ्गरेज सेनापतियोंका मतलब समझकर वालेस क्राफोर्ड और लांगविलको किला सौंपकर ४० आदमी क़िलेमें छोड़ बाकी ६० को लेकर सिवार्डका सामना करने चला। सिवार्डके पहुंचनेसे पहलेही वह लोग एक बांधकी बगलमें बड़ी बड़ी घासोंके भीतर जाकर छिप रहे। अङ्गरेज आहट पाकर मार मार करते उन पर टूट पड़े। किन्तु स्वदेशके लिये प्राणसमर्पण किये हुए वीरोंकी देह ईश्वरके दिये हुए बखतरसे रक्षित थी। इसीसे वह थोड़ेसे वीर उस प्रचण्ड अङ्गरेजसेनाकी गति रोकनेमें समर्थ हुए। वज्रमुष्टिमें तलवार धारण करके स्काटोंने असंख्य अङ्गरेजोंको कालके हवाले किया। अङ्गरेजोंको और आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई वह भौचक से होकर चित्रकी तरह वहीं खड़े रहे। सिवार्ड यह देखकर अचम्भेमें आगये कि क्योंकर इन इने गिने स्काटोंने असंख्य अङ्गरेज सेनाकी चाल रोकदी। तब उन्होंने किले पर आक्रमण करनेकी अन्तिम चेष्टा की। किन्तु फल उलटा हुआ। जब वह किलेकी तरफ़ चले तो स्काटोंने इस तेजीसे उन पर हमला किया कि उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा। सब मिलाकर १३० अङ्गरेज इस लड़ाईमें मारे गये। सिवार्डने सर आमिरको पांचसौ सेना सहित किला घेरे रहनेका हुक्म दिया और डराया कि तुम नहीं मानोगे

तो कल तुम्हें फांसी पर लटका दूंगा। सिवार्डके चले जाने पर वालिसने वालेंससे मुलाक़ात करके कहा कि एडवर्डकी गुलामी छोड़कर जातीय दलमें आजाओ। वालेंस सिवार्डका हुक्म पहले हीसे नहीं मानना चाहते थे और न माननेका नतीजा भी सुन चुके थे इसलिये उन्होंने सहजमेंही वालेसका कहना मान लिया।

दोनोंकी सेनाने मिलकर सिवार्डकी सेना पर धावा किया। इधर रामजे और रुथवेन वालेसकी विपद सुनकर सेना सहित झट-पट वालेससे आमिले। इन सबकी मिली हुई सेनासे अब भी सिवार्डकी सेना ज्यादा थी। संख्याकी ज्यादतीके भरोसे सिवार्डने अपनी सेनाके दो हिस्से किये। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध होने होने लगा। बड़ी देर तक संग्राम हुआ। रामजे और रुथवेन अपनी ताजा सेनासे शत्रुओंको मारनेमें गजब करने लगे। स्वयं सर जान सिवार्ड वालेसकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेज सेना सेनापतिके मारे जानेसे तितर बितर होकर भाग गई।

लड़ाई जीतकर रुथवेन सेन्ट जानस्टनको लौट आये और रामजे ने कूपर किलेको कूच किया। कूपरका किला बेलड़ाई उनके हाथमें आगया। उधर वालेस, क्राफोर्ड, गुथरी, रिचार्ड वालेस और लांगविल लगातार लड़ाइयोंसे थककर वालेंसके मकान पर आराम करने गये। वालेंसने चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेयसे उनकी खातिरदारी की।

सवेरे स्काट सेन्ट एन्डरूकी तरफ चले। वहांका अङ्गरेज विशप भागकर समुद्रकी राह इङ्गलेन्ड चला गया। इसके बाद वह लोग कूपर किलेको रवाना हुए। वहां कुछ दिन रह किले का दरवाजा तोड़कर चले गये।

सन् १२९८ ईस्वीकी १२ जूनको यह युद्ध हुआ। इस युद्धमें सब मिलाकर १५८० अङ्गरेज मारे गये जिनमें सर अलडोमर और सर जान सिवार्ड प्रधान थे।

इस ब्लैक आयरन साइडके युद्धमें स्काटोंने बड़ीही बहादुरी

दिखाई थी। चौगुनी प्रचगुनी अङ्गरेज सेनाके सामने पड़कर भी जरा न डरे न हटे। अंगरेजोंने उन पर बार बार हमला किया उन्होंने बारबार उनका वार व्यर्थ किया। अन्तमें उनकी अलौकिक वीरता पर मुग्ध होकर जयलक्ष्मी उनकी गोदमें आई। दो स्काट-सेनानायक इस युद्धमें मारे गये। फाइफके शेरिफ सर डङ्कन बालफोर, सर क्राई स्टोफर, सीटन और सर जान ग्रेहम घायल हुए। इस युद्धमें रामजे, गुथरी और बिसिटने असाधारण विक्रम दिखाया था।

यह एक मामूली जंगली लड़ाई थी किन्तु इससे स्काट वीरोंका यश:सौरभ चारोंओर फैल गया। सिवार्डकी मृत्यु सुनकर फाइफ के सब अङ्गरेज वहांसे भाग गये। सिर्फ लकलेवेनकी छावनीमें थोड़ी सी अङ्गरेज सेना थी। उस छावनीके चारों तरफ पानी था इससे उसने समझा था कि कुछ डर नहीं है किन्तु बहुत जल्द उस की भूल दूर हुई। सब स्काट सेनाने कैंबेलमें एकत्र होकर वहांसे स्काटलेण्डसवेल नामक स्थानमें आकर छावनी डाली। रातको भोजनके पश्चात् वालेस सिर्फ १८ आदमी साथ लेकर चुपकेसे छावनीसे निकलकर लकलेवेनकी तरफ चला। इस पारकी बन्दरगाह में पहुंच कर साथियों को वहीं छोड़ उस पार से नाव लानेके लिये स्वयं जलमें कूदपड़ा। उस वक्त उसके बदन पर सिर्फ एक कमीज थी और गलेमें तलवार लटकती थी। वालेस बातकी बातमें तैरकर दूसरे किनारे आपहुंचा। नावपर कोई आदमी नहीं था इस लिये वह बेखटके नाव इस पार ले आया। सब उस पर चढ़ कर उस पार पहुंच गये और अङ्गरेजों पर आक्रमण किया पलभरमें सब अङ्गरेज मारे गये। उस छोटेसे किलेका सब सामान अब उनके हाथ आया। रातको यह खबर स्काटलेन्डसवेलमें भेजी गई। वहांके स्काट सवेरे आकर विजयी सहचरोंके शामिल हुए। वह छोटी सी सेना विजयकी खुशीमें आठ दिन तक वहां उत्सव करती रही।

आठ दिनके उत्सवके बाद स्काट किलेकी सब चीजें लूट कर उसी नावसे इस पार आये और नाव जलाकर चले गये। वालेस सेण्ट जानस्टूनको गया। वहां बिशप सिनक्लेयर उससे आकर मिले। वालेस उत्तरकी तरफ जानेके लिये बहुत अधीर हुआ। किन्तु बिशपने उसे मना किया। क्योंकि उस समय शत्रु सेना स्काटलेन्डको चारोंओरसे रौंदती फिरती थी। अंगरेज़ बीचका रास्ता इस गरजसे रोके बैठे थे कि उत्तरवाली जातीयसेनासे वालेस मिलने न पावे। इधर बूकनके अर्ल इस बातकी कोशिश कर रहे थे कि जिससे वालेसके पास किसी तरह रसद न पहुंचने पावे।

अङ्गरेजोंके हजार कोशिश करने पर भी चारोंओरसे कंगाल आदमी वालेसके झण्डेके नीचे आकर खड़े होने लगे। नवयुवक रेन्डलफने सरसे वालेसकी मददके लिये बहुतसे आदमी भेज दिये। इस बीचमें जाप और बूयर चुपकेसे शत्रु सेनाकी भीतरी हालत देख आये और वालेसको बता दी। वालेसने यह खबर पाकर जाप स्टिफन और कार्ले आदि ५० सहचरों सहित सेन्टजानस्टूनसे यारेथ किलेको कूच किया। राहमें एक विधवा स्त्रीने जातीय भावके जोशमें आकर उस छोटीसी सेनाके लायक सब खाना तय्यार रखा था। एक मछुआ पथप्रदर्शक बनकर रातको उन्हें उस खाईसे घिरे हुए किलेके पास लेगया। किलेके पीछे एक छोटासा गुप्त पुल था। स्काट उसी पुलसे किलेके भीतर घुसे। डेढ़ पहर रात चली गई थी। अङ्गरेज बेखटके होकर खाना पीना कर रहे थे इतनेमें वालेस उस दालानके दरवाजे पर दिखाई दिया। सब लोग चौंककर उस की ओर देखने लगे। देखतेही देखते वालेसकी तलवारने किलेदार टामलीनका सिर काट डाला। मालिककी मौत देखकर अङ्गरेजोंकी अक्ल मारी गई। एक एक करके किलेकी रक्षा करने वाले १०० अङ्गरेज़ स्काटवीरोंकी तलवारोंके शिकार हुए। इसके बाद वालेसने अपने चाचाको कैदसे छुड़ाया। टामलीनने वालेससे पार न पाकर उसके चाचाको पकड़वाकर कैद कर रखा था। दुष्टने

इस बूढ़ेके हाथ पैर लोहेकी जंजीरमें बांधकर पानीके गढ़ेमें डाल दिया था। बूढ़ा जञ्जीरसे छूटकर भतीजेको आशीर्वाद देने लगा। विजयी वीर आनन्दसे जयध्वनि करने लगे। उस रात वह वहां आरामसे सोये। दूसरे दिन भी वहीं रहे। बीच बीचमें सिर्फ अङ्गरेज आक्रमणकारी आकर उनके विश्राममें खलल डालते रहे। स्काट हरबार उनका हमला व्यर्थ कर देते थे। इस तरह उन्होंने वहां दूसरी रात भी बिताई।

तीसरे दिन तड़के उन्होंने वहांसे डम्बार्टनको कूच किया। वहांसे कुछ दूर टरउड स्थानमें सारा दिन बिताकर रातको चुपके चुपके शहरमें पैठे। वहां जातीयभावका ख्याल रखनेवाली वालेसकी पुरानी जान पहचानकी एक विधवा औरत रहती थी। वालेस उसके मकान पर गया। उसने स्काटिश वीरोंको एक गोदाममें लेजाकर छिपा दिया और चर्व्य, चोष्य, लेह्य पेयसे उनकी खूब खातिर की। उसके ५ बेटे थे। उसने सबसे वालेस का मंत्र ग्रहण करनेके लिये शपथ कराया। वह विधवा स्त्री अङ्गरेजोंको कर देकर सुख और आराम से शहरमें रहती थी उसे किसी तरहकी तकलीफ न थी किन्तु जातीय दलके आनेसे उसने शान्तिको दूर भगाकर जातीय कार्य्यमें आत्मोत्सर्ग करदिया।

वालेसकी आज्ञासे वह विधवा जिन जिन मकानोंमें अङ्गरेज रहते थे उनपर कुछ निशान कर आई। इसके बाद वालेस अपने साथियों सहित अस्त्र शस्त्रसे सज घोड़े पर सवार होकर सड़कमें निकला। वह लोग सबसे पहले एक होटलमें पहुंचे। कई अङ्गरेज वहां खाना पीना कर रहेथे। वालेस की तलवारसे उनमें से अधिक मारेगये। उसके साथियोंने बाकी अङ्गरेजोंको भी मार डाला। होटलका मालिक यह देखकर बेहद खुश हुआ और मद मांससे उनकी खूब खातिरदारी की। उनको भर पेट खिला पिला कर होटल वाला पथ दर्शक होकर अङ्गरेजोंके थानेमें लेगया। तीन सौ अङ्गरेज शहरकी रखवालीके लिये तैनात थे उसी रातको

एकएक करके वहसब जातीयदलके हाथ मारे गये। सूर्य्योदयके पहले ही वालेस अपने दल सहित नगरसे कुछ दूर एक गुफामें जाकर दिन भर छिपा रहा। होटल वालेने मद मांससे वहांभी उनका पेट भरा।

रातको वह लोग रोजनीथके पहाड़ी किलेकी तरफ रवाना हुए। यहां बहुतसी अङ्गरेज सेना थी। एक छोटेसे पहाड़ पर किला बना था। स्काट जंगल झाड़ियोंसे होतेहुए चुपकेचुपके पहाड़की चोटी पर पहुंचे। किलेके निवासी उस समय किसी विवाहके लिये गिर्जेमें गये थे सिर्फ कई गुलाम किलेमें मौजूद थे। स्काट बेधड़क किलेमें घुस गये कुछ देर बाद अङ्गरेज गिरजेसे लौट कर आये। वह गिन्तीमें ८० या इससे भी कुछ ज्यादा थे दरवाजेपर आते ही स्काट बड़े वेगसे उनपर टूट पड़े। पलभरमें सब अङ्गरेज जमीन पर लोटने लगे। स्काटोंने सात दिन तक वहां विजय का उत्सव मनाया। फिर किलेका माल लूटकर उसमें आग लगा चलते बने।

यहांसे वह फलसन नामक स्थानमें गये। वहां अर्ल मलकम रहते थे। ग्रेहम, बायड, लुन्डिनके रिचार्ड, एडम वालेस और बार्क आदि वालेसके मित्र भी मलकमके मकान पर मौजूद थे। सबने बड़ी धूमधामसे वालेसका स्वागत किया। वालेस बड़े दिन तक वहां रहा। यहीं उसे अपनी माताके मरनेकी खबर मिली। उसकी माताने एलरस्लीसे निकाली जाकर डनफर्लिन एबीमें शरण ली थी। वहीं वह मरी। माताके मरनेकी खबरसे वालेसको बड़ा शोक हुआ और आप उसके दफन करनेमें शामिल होनेके लिये जानेका साहस न करके जाप और ग्रेयरको धूमधामसे यह काम करनेके लिये भेजा। एक दिन गेरीबाल्डीको भी इसी तरह प्राणसे प्यारी स्त्री एनिटाको दफनानेका भार आश्रयदाता किसानके हाथमें सौंपना और भग्गकर पीछा करनेवाले आस्ट्रियावालोंके हाथसे जान बचानी पड़ी थी।

डगलसडेलके सर विलियम डगलसने यह सुनकर कि वालेस फिर

लड़ाईके मैदानमें उतर आया है जातीय व्रत पालन करनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि उन्होंने जवानीमें लाचार होकर एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की थी, यद्यपि उन्होंने अङ्गरेज मेमसे विवाह किया था तथापि जातीय भाव उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। इन दिनों उनकी खी का कोई रिश्तेदार संक्लहर नामक किलेका अफसर था। उसने उस किले और डगलस डेलके बीचके स्थानको अच्छी तरह बरबाद कर डाला था। डगलसने इस अत्याचारका बदला लेनेके लिये आज स्वयं उस किले पर धावा किया। उन्होंने टामडिक्सन नामक एक नौकरको पहले वहां भेजा। राहमें एण्डर्सन नामक एक किलेके आदमीसे उसकी भेंट हुई। डिक्सनने उससे अपनी पोशाक और घोड़ा बदल लिया और वही पोशाक पहन कर और लकड़ीका बोझ लेकर सवेरे किलेमें घुसनेका विचार किया। एन्डर्सनसे सुना कि क़िलेमें सिर्फ ४० हथियारबन्द आदमी हैं। टाम डिक्सन उसी पोशाकमें उसी घोड़े पर चढ़ कर किलेकी तरफ जाने लगा इधर एन्डर्सन भी पीछेसे डगलसको लेकर लौटा। डगलस और डिक्सनको पासही कहीं छिपाकर एन्डर्सन अकेले दरवाजे पर पहुंचा। इतना सवेरे दरवाजा खुलवानेके लिये दरवानने उसे बहुत डांटा। दरवाजा खुलतेही एन्डर्सनने कई डालियां काट कर द्वार पर इस ढङ्गसे डालदीं कि फिर दरवाजा बन्द नहीं किया गया। इसी समय एन्डर्सनके इशारेसे डगलस दलबल सहित किलेमें घुस आया। सबसे पहले दरवान और फिर एक एक करके सब अंगरेज मारेगये। सिर्फ एक अङ्गरेजने जान बचाकर डूरिस डियरमें जा कर यह खबर दी। डगलस पर हमला करनेके लिये बहुत जल्द टाईबारस सूरमें एक अङ्गरेज सेना इकट्ठी हुई। डगलसने डिक्सन की मार्फत इस आसन्न विपदकी खबर वालेसके पास भेजी। वालेस उस समय लेडेन गढ़में था। उसने तीन सौ सेनासे उस किले पर दखल जमाया था। फिर किलसिथ क़िले पर दखल करने का इरादा करता था। उस समय रावेंसडेल उस किलेका अध्यक्ष

था वह किसी कामसे दूसरी जगह गया था। किन्तु लार्ड किउमिन उनकी गैरहाजिरीमें वहां मौजूद था वालेसने किला घेरने का काम मलकम पर छोड़ कर डगलसकी सहायताके लिये कूच किया। राहमें अचानक राविंस डेलसे उसकी मुलाकात होगई। राविंसडेल पचास सिपाहियों सहित अपने किले को लौट रहा था। मतवाले हाथी पर जैसे शेर टूटता है वैसेही वालेस और उसके सैनिक उस छोटीसी अङ्गरेज सेनापर टूट पड़े। अङ्गरेज एक सांस भागे और आकर किलस्मिथ किलेमें घुसना चाहा किन्तु मलकमने दो सौ स्काटिश सेना सहित किला घेर रखा था। इस लिये अंगरेज वहां जातेही उसके शिकार हुए। वालेस लूट पाटमें मशगूल न होकर डगलसकी मददको रवाना हुआ।

राहमें लिनलिथगोपील और डनकीथ आदि किले उसके हस्तगत हुए। इधर वालेस की लगातार विजयसे उत्साहित होकर बहुतसे स्काटिश बीर उसके झण्डेकी छायामें आकर खड़े हुए। लोडर, सीटन, वास, ह्यू, दी है प्रभृति अपनी अपनी सेना सहित वालेससे आमिले। इस मिलनसे वालेस और मलकम बहुतही प्रसन्न हुए। पीवल्स से आकर वालेसने घोषणाकी कि जो हम लोगोंके शामिल होंगे वह बहुत कुछ पुरस्कार पावेंगे। वालेसकी सेना धीरे धीरे ६०० होगई। उसने उसे लेकर क्लाइडस डेलकी ओर कूच किया। अङ्गरेजोंने संक्कहर किलेमें डगलसको घेर रखा था किन्तु वालेसका आना सुनतेही किलाछोड़कर इङ्गलेन्डको भागे। वालेस क्राफोर्डमूरतक पहुंचा था। अङ्गरेजोंका भागना सुनकर उसने मलकमको बाकी सेना सहित छोड़ सिर्फ ३ सौ चुने हुए सवार लेकर शत्रुओंका पीछाकिया। क्लोजबरनमें जाकर शत्रुओंको घर पकड़ा। पीछे वाली एक टुकड़ी सेनासे लड़ाई होने लगी। पलक भरमें कोई डेढ़ सौ अङ्गरेज खेत हुए। आगेकी सेना यह सुन कर पीछे लौटी। इधर मलकमकी सेना भी वालेससे आमिली। दोनों सेना मिलकर बड़े जोरसे अङ्गरेज सेना पर टूट पड़ी। वह जोर

न सह कर अङ्गरेज फिर भगे। स्काटोंने फिर पीछा किया। डाल सुइन्टन पहुंचनेसे पहलेही पांच सौ अङ्गरेज मारे गये तोभी पीछा न छूटा। घोड़ोंके थक जाने पर वालेस और ग्रेहम पैदल पीछा करने लगे। उसी समय सौभाग्यसे एडम कोरी जानस्टन, कुर्कपेट्रिक और हालिडे नये जोशसे वालेससे आमिले। वालेस पहली सेना को आनेका भार ग्रेहमको सपुर्द करके आप इस नई सेनासे एकघोड़ा चुनकर उसपरसवारही नयेवेगसे पीछाकरताचला। रास्ते में वह लोग अङ्गरेज-मेधयज्ञ करते जाते थे। डुरिसडर, इनाक और ट्राइवर मूरके किलेदार मारे गये। काकपूल नामक पुलके किनारे बेहिसाब अङ्गरेज मारेगये। कितनेही नदीमें कूद कर डूब गये। यहां केयर लावेरोकखानके अध्यच मायसवेल वालेस से आमिले। उस रात वहीं रहकर दूसरे दिन उन्होंने डमफ्रिज की यात्राकी। मार्गमें घोषणा करते गये कि स्काटलेन्ड फिर जातीय दलके हाथमें आगया है इसलिये अब डरकी कुछ बात नहीं है। अङ्गरेज जहां जहां थे जल या थलके रास्ते इङ्गलेन्ड भाग गये। सिर्फ एक अङ्गरेज अबभी स्काटलेन्डमें हुकूमत करता था। सिर्फ डन्डीका किला मार्टन नामी अङ्गरेजके अधीन था। इसके सिवा समस्त स्काटलेन्डमें फिर जातीय पताका उड़ने लगी।

किन्तु एक भी विदेशीका चरण स्काटलेन्डकी छाती पर रहते वालेसको कल न थी। इस लिये उसने डगलसको फिरसे पाये हुए प्रदेशोंकी रक्षाका भार देकर डन्डीको कूच किया। वहां पहुंच कर वह शहर घेरने लगा मार्टनने प्राणभिक्षा करके आत्मसमर्पण करना चाहा किन्तु वालेस इसपर राजी न हुआ। उस समय एड-वर्ड सेना सहित फ्रांसमें थे। स्काटलेन्डमें अङ्गरेज मेधयज्ञका हाल सुन कर उन्होंने भारी सेना सहित स्काटलेन्ड पर चढ़ाई करने का विचार किया। वालेस डन्डीको घेरे हुए था इस बीचमें एक दिन उसके विश्वासी कर्म्मचारी जापने आकर खबरदी कि एडवर्ड एक लाख सेना लेकर आरहे हैं। यह समाचार पाकर वालेस दो

हजार सेना सहित स्क्रिमजिश्रोरको डन्डी घेरे रहनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजानस्टनको चला। यहां कई दिन अङ्गरेजोंकी बाट देखता रहा। इस बीचमें अङ्गरेज सेनापति उडस्टक दस हजार सेना सहित स्टर्लिङ्ग ब्रिज नामक स्थानमें आपहुंचे। मानो एक काली घटाने आकर स्काडलेन्डके सौभाग्य सूर्य्यको छिपा लिया।

तेरहवां अध्याय।

ग्रेरिफ मूयरका युद्ध—फलकार्कका युद्ध—सर जान ग्रेहमकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेट—लिंगलिथगाउमें अङ्गरेजों पर अचानक घेरा—डन्डी पर अधिकार—वालेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—जिनके जानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बड़े आदरसे वालेसका स्वागत।

डन्डीका घेरा उठवा देनाही उडस्टक चाहते थे। इस लिये टे नदीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये। यह बड़ी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोंका कुछ डर न हुआ। विशेषकर उनके चतुर पथप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोड़कर सेन्ट जानस्टन होकर लेजाना चाहते थे। उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साथियों सहित शत्रुकी बाट देखता था। उडस्टकने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोंकी संख्या उनकी सेनासे बहुत कम है। यह देख वह लड़ाईके लिये उतर पड़े। अङ्गरेजी सेना ऐसी धीरतासे चलती थी कि सर जान रामजेने पहले उसे देखकर समझा कि यह अपनेमुल्कके आदमीहैं। किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि झट समझ गई कि वह कौन हैं। इसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार होकर ग्रेरिफ मूयरके मैदानमें कतार बांधकर खड़े होजानेका हुक्म

दिया। अङ्गरेज बड़े जोरशोरसे उन पर टूट पड़े। दोनों ओरसे घमासान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून होगई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे समूची अङ्गरेज सेना अपने सेनापति सहित लड़ाईमें मारी गई। बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बड़ी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर कूच किया। वहां आकर पुल तोड़ दिया और नदीमें बहुतसे खूंटे गड़वा दिये जिससे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। थोड़ीही दूर पर नदीमें अङ्गरेजोंके जहाज, विपद पड़नेपर अङ्गरेजोंको चढ़ा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लोडर नामक सहचरको उनमें आग लगा देनेके लिये भेजा। लोडर काम पूरा करके झट उससे आमिला। इधर सोटन अर्ल मलकाम, सर जान ग्रेहम वगैरह भी अपने अपने सहचरों सहित वालेससे आमिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ़ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सैना लेकर टर्फीचिनमें आपहुंचे हैं। एडवर्ड मत्त हाथीकी तरह चारोंओर संहार करते आते थे यहां तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगोंकी सम्पत्ति भी उन्होंने नहीं छोड़ी। इधर बूटके स्टुआर्ट बारह हजार और किडमिन बीस हजार सेना लेकर फलकार्कके मैदानसे कुछ दूरपर लड़ाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उस असंख्य अङ्गरेज अचौहिणीके सामने आया। इसकी तरफ अर्ल मलकम, सरजान ग्रेहम, रामजे, सोटन, लोडर, लुन्डिन और एडम वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर समुद्रगामिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भांति टर्फीचिनसे खामनमूरके मैदानको चले।

भाग्य फूटने पर सहजमें नहीं सुधरता। स्काटलेन्डके दुर्भाग्य-वश इस अन्तिम अवस्थामें स्काटिश सेनामें फूट फैली। स्वजाति विश्वासघाती किडमिनने वालेससे डाह करके उसकी सेनामें फूट डाल दी। इस बातको लेकर भारी फसाद खड़ा हुआ कि सेना-पति कौन हो। किडमिनने उज्र उठाया कि स्टुआर्टके रहते

भाग कर पासके टरउड बनमें शरण लेनेके सिवा वालेस और उसकी सेनाके लिये और कोई उपाय न रहा। सोचने विचारने का भी समय नहीं। वालेस पलभरमें सेना सहित एडवर्डकी सेना के बीचसे हवाकी तरह टरउड बनको चला गया। इतनी जल्दीमें यह काम हुआ था कि वालेसके व्यूहभेद करके चले जानेके बाद एडवर्डको सब हाल मालूम हुआ। घोड़ोंकी टापोंसे धूलउड़कर चारों ओर इतना अंधेरा होगया था कि वालेसको समूची सेना चलेजानेके पहले असली बातकी कोई जान न सका। जैसे भहा तूफान सामने को दढ़ अजड़ सब चीजोंको उड़ा लेजाता है वैसेही वालेस और उसकी सेना सामनेकी विपक्षी सेनाको दल मल कर निकल गई। वालेस ग्रेहम और लोडर तीनसौ चुनी हुई सेनासे पीछा करनेवाले शत्रुओंका आक्रमण रोकते रोकते जंगलको चले गये। ब्रूसने बीस हजार सेना लेकर भागते हुए स्वदेशियोंका पीछा किया। वालेस अपनी चुनी हुई सेनाको प्रधान सेनासे मिल जानेका हुक्म देकर ग्रेहम और लोडरको मदद देता शत्रुओंका आक्रमण व्यर्थ करने लगा। जो उसकी प्रचण्ड तलवारकी परिधिमें आता वह कालके हवाले होता। अन्तमें ब्रूसने स्वयं वालेसका गला ताक कर बर्छी चलाया। वालेस जखममेंसे बर्छा निकालकर पट्टी बांधनेलगा। इधर ग्रेहम और लोडर बड़ी दिलेरीसे शत्रुओंका सामना करने लगे। वालेस फौरन तीन सौ सेना लेकर ग्रेहम और लोडरकी मददको पहुंचा। उधर विशपबेक अपनी सेना सहित ब्रूसकी मददको आ गये। ब्रूसने फिर वालेस पर बर्छा फेंका किन्तु अबके उसका निशाना खाली गया। वालेसने क्रोधसे अन्धे होकर कराल तलवारकी चोटसे ब्रूसको नीचे गिराया। ब्रूसकी सेनाने उसीवक्त उन्हे घोड़े पर चढ़ा दिया। वालेस क्रुद्ध शेरकी तरह अकेले रणमें गर्जने लगा। बहुत जल्द ग्रेहम उसकी मददको पहुंच गया। पहुंचते ही उसने तलवारसे ब्रूसके सामनेके अङ्गरेजोंको काट डाला। यह देखकर एक दूसरे अङ्गरेज नाइटने पीछेसे उसकी पीठमें जोरसे

बर्छा मारा। ग्रेहमने पैरसे कुचले हुए सर्पकी तरह गुस्से में आकर एकही तलवारमें उसको काट डाला। किन्तु यही उसका आखिरी वार हुआ। मृत्यु सामने देखकर उसने प्रधान सेनासे मिलनेके लिये उधर घोड़ेकी बाग मोड़ी। किन्तु रास्तेमेंही घोड़ा मारा गया और क्षणभरमें ग्रेहमका प्राणपक्षी उड़ गया। स्काटलैन्डके पूर्ण चन्द्रमाको राहुने ग्रस लिया।

वालेस शोकमें पागल होगया। मतवाले हाथीकी तरह शत्रुओं को रौंदने लगा। जिसे सामने पाने लगा उसे मारने लगा। ग्रेहम की लाश पर उसकी आग बरसाने वाली आंखें पड़ती थीं और बिजलीकी तरह उसकी नसनसमें खून दौड़ता था। ब्रूसने वालेसको शोकान्ध देखकर अपने बर्छाधारी सैनिकोंको उसके घोड़े पर बर्छा चलानेका हुक्म किया। उनके बर्छेसे उसका घोड़ा घायल हुआ। तब वालेसको होश ठिकाने आया। वह घोड़ेको दौड़ाकर अपनी सेनामें आगया। सेना कैरन नदीके किनारे खड़ी होकर उसका रास्ता देखती थी। वालेसने आतेही उसे नदी पार होनेका हुक्म दिया; स्वयं सबसे पीछे घोड़े पर चढ़ा नदीमें कूद पड़ा। स्वामिभक्त घोड़ा स्वामीको उस पार पहुंचाकर गिर पड़ा। गिरा और मरा। उसी वक्त कार्लेने उसके लिये एक दूसरा घोड़ा लादिया। वालेस उस पर सवार होकर झट अपनी सेनामें आगया। इस फलकार्क-कुरुक्षेत्रमें तीस हजार अङ्गरेजी सेना मारी गई। उधर सर जान ग्रेहम और सिर्फ पन्द्रह स्काट पैदल मारे गये। अंगरेजोंने लड़ाई तो जीती पर असंख्य अङ्गरेज परिवारोंमें हाहाकार पड़ गया।

वालेसकी सेना टरउड बनमें चली गई मगर वह और कार्ले कैरन नदीके किनारे कुछ देर ठहरे; उस पार फलकार्कके मैदान में प्यारे मित्र ग्रेहमकी लाश पड़ी है इससे वालेसका हृदय आगे बढ़नेसे व्यथित होने लगा। इधर फलकार्क युद्धमें जय प्राप्त करनेके बाद ब्रूसकी आंखें खुलीं। तब उन्होंने देखा कि अपने पैरमें आप

कुल्हाड़ी मारी है, तब समझा कि अङ्गरेज़ोंसे मिलकर खदेशका सत्यानाश किया है। अब पश्चात्तापसे उनका कलेजा फटने लगा। तब नदीके उस पारसे वालेसको मित्रभावसे बुलाया। दोनों मिलने पर एक दूसरेको चूमने लगे। वालेसने शपथ खाकर कहा कि राजगद्दी लेनेकी मेरी लालसा नहीं है। मैं जातीय स्वाधीनताके लिये इतने दिनसे लड़ रहा हूं स्काटलेन्डके असली राजाकी अधीनता माननेको सब तरहसे तय्यार हूं किन्तु राजा होकर प्रजा पर हथियार उठाना—ब्रूससे ऐसा अपराध हुआ है जो क्षमाके योग्य नहीं। यह बात वालेसने साफ साफ कहदी। ब्रूसका हृदय वालेस के वाक्यसे पिघल गया। अन्तमें दोनों दूसरे दिन सवेरे डुनिपिसके गिरजेमें मिलनेका वादा करके उस दिन अपने अपने डेरेको चले गये। यह भी वादा हुआ कि ब्रूस बारह स्काटों सहित और वालेस दस आदमियों सहित आवेंगे। ब्रूस वालेससे बिदा होकर झटपट एडवर्डके खेमेमें चले गये। वहां हाथमें खून लगे हुएही सबके साथ खाना खाने बैठ गये। एक अङ्गरेजने उनकी दिल्लगी उड़ाई—"तुम स्काट लोग अपना खून आप पीते हो" यह बात उनके हृदय पर वज्रसी लगी। उन लोगोंने बारबार हाथ धोनेको कहा मगर उन्होंने उत्तर दिया—"यह अपना खून है धो देनेका नहीं है।" उस दिनसे ब्रूसकी तलवार फिर स्काटलेन्डके विरुद्ध नहीं उठी।

इधर वालेस टरउड जंगलमें चला आया। वहां उसकी सेना खा पीकर सोने लगी वह भी बिस्तरे पर गया पर उसकी आंखोंमें नींद नहीं आई। उठ बैठा। प्यारे मित्र ग्रेहम और स्काटिश वीरोंकी लाशें फलकार्क मैदानमें पड़ी हैं अभीतक दफनाई नहीं गई—इस मर्मभेदी चिन्ताने उसे व्याकुल कर दिया। वह अर्ल मलकम, लुन्डिन, रामजे, लोडर, सीटन और रिकार्टनके एडमको साथ ले पांच हजार सुसज्जित सेना सहित उसी रातको लड़ाईके मैदानमें आया। लाशोंके ढेरमेंसे चुन चुनकर स्काटिश वीरोंकी

लाशें निकालीं। जब प्रियमित्र ग्रेहमकी देह मिली तब वह घोड़े से उतरकर लाश गोदमें लेकर रोने और विलाप करने लगा। उसके रोने विलखनेसे सब रोने लगे। अन्तमें सबने उसकी गोदसे लाश लेकर फलकार्कके गिरजेमें दफन की।

प्यारे मित्रकी अन्तिम क्रिया होजाने पर वादेके अनुसार वालेस दस आदमियों सहित डुनिपेसके गिरजेमें ब्रूससे भेट करने गया। अपनी छोटीसी सेनाको फलकार्कके मैदानमेंही ठहरनेको कह गया। ब्रूस ठीक समय पर वहां पहुंच चुके थे। ग्रेहमके शोकसे वालेस ब्रूसके साथ मीठी बातें न कर सका। उसकी मर्मभेदी बातोंसे ब्रूसका हृदय बिंधगया। उन्होंने गिड़गिड़ाकर कहा "वालेस, अब अधिक मुझे मत धिक्कारो मैं अपनी करनीपर आप रोरहाहूं।" ब्रूसके अपना दोष स्वीकार करने पर वालेसके हृदयका भाव बदल गया। क्रोध दूर होकर भक्तिभावका सञ्चार हुआ। वह हृदय के उच्छ्वाससे ब्रूसके चरणोंमें गिर पड़ा। ब्रूसने हाथ फैलाकर उसे गोदमें उठा लिया। ब्रूसने वेदीके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी स्वदेशियों पर हथियार नहीं उठाऊंगा और एडवर्डसे जो प्रतिज्ञा कर रखी है उसका समय पूरा होतेही वालेससे आमिलूंगा। दोनोंने एक दूसरेसे बिदा ली। ब्रूस एडवर्डकी छावनीमें चले गये और वालेस अपनी सेनामें आगया। १२९८ ईस्वीकी १२ वीं जुलाईको फलकार्कका युद्ध हुआ।

वालेसकी लड़नेकी प्रतिभा शान्त होनेवाली नहीं थी। प्यारे मित्रकी मृत्युका बदला लिये बिना उसकी इच्छा मैदानसे हटनेकी न हुई। फलकार्कमें जय पाकर एडवर्ड सेना सहित लिनलिथ गाऊ नामक शहरमें खुशीका जलसा करते थे। वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक दलका सेनापति मलकमको बनाया और एकका आपहुआ। दोनोंने दो ओरसे अचानक अङ्गरेजी छावनीपर आक्रमण किया। अङ्गरेज इसके लिये तय्यार न थे इसलिये बहुतसे अङ्गरेज पहलेही हमलेमें मारे गये। ब्रूस अपनी सेना लेकर लड़ाईके

स्थान से हट गया। एडवर्ड वीरोचित विक्रमसे संग्राम करने लगे। वालेसने उनके झण्डे वाले को एकही वारमें मार गिराया। झण्डा गिरा देख कर अंगरेज सेना डर कर भागी। एडवर्डने स्वयं लाचार होकर भागती हुई सेनाका साथ दिया। लिनलिथगाऊमें ११ हजार अङ्गरेजोंका सथराव होगया। स्काट तोभी न हटे। समूची स्काट सेनाने अङ्गरेजोंका पीछा किया। उनकी प्रचण्ड तलवारोंसे चालीस हजार अङ्गरेज भागते भागते मारे गये। बाकी सेना रुक्षित एडवर्डने सालवे पार ही इंगलेण्डमें जाकर प्राण बचाया।

वालेस लौट कर एनम प्रदेशसे होता हुआ एडिनबरोंमें आया, आकर क्राफोर्डको फिर उसका शासनकर्त्ता बनाया। अङ्गरेजी आक्रमणसे पहले जो जिस पदपर थे और जीतेथे उन्हें उन्हीं पदोंपर नियुक्त किया। समस्त स्काटलेण्डमें फिर विश्वव्यापी शान्ति विराजने लगी। डन्डी किलेपर स्क्रिमजियो द्वारा फिर दखल होगया।

अवसर देखकर वालेसने सेन्ट जानस्टन शहरमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई। जब पार्लीमेन्टके सभ्य अपने अपने स्थान पर बैठ गये तो वालेसने सबके सामने अपनी गवर्नरीसे इस्तेफा दिया। उसने साफ साफ कह दिया कि जब जमींदार लोग मुझसे डाह रखते हैं तब मैं इस पद पर नहीं रहना चाहता। कहा कि मैं फलकार्कके मैदानमें पूरा फल पाचुकाहूं—देशके लिये जो आत्मोत्सर्ग किया था उसके बदले यथेष्ट अपमान और तिरस्कार पाया है। इस बार मैंने स्काटलेण्डको फिर शत्रुओंके पंजेसे निकाल दिया है अब मैं जन्मभूमिसे बिदा लेकर फ्रांस चलाजाऊंगा। वहां जाकर जैसे बनेगा जिन्दगीके बाकी दिन बिताऊंगा।

पार्लीमेन्टने उसे ऐसा न करनेके लिये बार बार अनुरोध किया किन्तु वालेसका प्रण टूटनेवाला नहीं था। वालेसने देख लिया कि जबतक स्काटलेन्डकी गद्दीके लिये जागीरदारोंमें झगड़ा रहेगा, जब तक मतलबके अन्धे तंगख्याल जमींदार मुझसे डाह करेंगे, जबतक स्काटलेन्डके असली राजा ब्रूस अपना ख्याल न करेंगे तबतक

स्काटलेण्डको सदाकेलिये शत्रुओंकीमुट्ठीसे निकाललेना असंभव है। इसलिये स्वदेशमें रहकर स्वदेशका बारबार अधःपतन नहीं देख सकता। जब कभी दिन आवेगा, फिर स्वदेशके उद्धारकेलिये हथियार उठाऊंगा। यह कहकर वह आंसूभरी आंखोंसे पार्लीमेन्टसे बिदा लेकर सिर्फ अठारह सहचरों सहित फ्रांसको चलागया। स्काटलेन्डका सुखसूर्य्य कुछ दिनके लिये अस्त होगया !

जो अठारह आदमी वालेसके साथ गये उनमें लांगविल, साइमन रिचार्ड वालेस, सर टामसग्रे, एडवर्ड लीटल जीप और ब्रूयर मुख्य थे। अपनी इच्छासे देशत्यागनेवालायहवीरदल कुछ व्यापारियोंसहित डण्डीबन्दरमें जहाजपैर सवार हुआ। जहाज इङ्गलेन्डके राज्यसे होकर जानेलगा। कुछही दूरपर लाल पालका शेर चिन्हित ध्वजावाला एक जहाज अचानक देखपड़ा। व्यापारियोंको मालूम था कि यह किसका जहाज है। उन्होंने वालेससे कहा कि यह लीनके जान का जहाज है। यह जालिम अङ्गरेज स्काटलेन्डवासियोंको मार डालना पुण्य समझता था। देखते देखते जान वालेसके जहाजके निकट पहुंच गया। पहुंचतेही उसने "युद्धं देहि" कहकर स्काटों को लड़नेके लिये ललकारा। उस ललकारके उत्तरमें ब्रूयरके धनुषसे तीन बाण छूटे। एक एक बाणसे एक एक अङ्गरेज मारा गया। अङ्गरेज क्रोधमें आकर एक घण्टे लगातार गोले और बाण बरसाते रहे। अन्तमें दोनों दलोंमें हाथापाई और तलवार की लड़ाई होने लगी। एक एक करके साठ अङ्गरेज स्काटोंके हाथ मारे गये। जानको भागनेका डौल लगाते देखकर क्राफोर्डने उसके जहाजके मस्तूलमें आग लगादी और वालेस, लांगविल और ब्रूयर उसे पकड़ कर अपने जहाज पर लेआये। वालेसकी तलवारकी एक ही चपेटमें उस जालिम डाकूका सिर धड़से अलग होगया साथही साथ युद्धकी आग भी बुझ गई। खबर देनेके लिये एक भी मल्लाह देशको नहीं लौटने पाया। सब स्काटोंने उस का रसदसे भरा जहाज लेकर फ्रांसको कूच किया। स्लूइस बन्दरमें

पहुंचकर वालेसने माल असबाब खुट लेलिया और जहाज व्यापारियों को देदिया। वालेस फ्लान्डर्स होकर फ्रांस गया। पेरिस राजधानीमें फ्रांस नरेशने बड़े आदरसे वालेसको उतारा।

चौदहवां अध्याय

वालेसका फ्रांसका सेनापति बनाया जाना—एडवर्डकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—किउमिन और ब्रूसकी सन्धि—आर्मीसकी सन्धि—अंगरेजोंकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—रसलिनका युद्ध—अङ्गरेजोंकी हार—एडवर्डकी फिर चढ़ाई—फिलिपका विश्वासघात।

फ्रांसनरेशने वालेसका स्वागत करके उसको समूचे गायन प्रदेश की हुकूमत सौंपदी। उन्होंने वालेसको ड्यूक बनाना चाहा। वालेस ने स्वीकार नहीं किया तो उसे नाइटकी उपाधि और फरासीसी सेनापतिका पद दिया। उन्होंने उसको अपनी वर्दी आप पसन्द कर लेनेको कहा। वालेस अपनी सदाकी लाल सिंहवाली पोशाक व्यवहार करने लगा। फिलिपने उसे बहुत जल्द रणभूमिमें उतरनेका अनुरोध किया। उस समय इङ्गलेन्डसे फ्रांसकी बड़ी भारी लड़ाई चलती थी। वालेसके मैदानमें आतेही चारोंओरसे स्काट उसके झण्डेके नीचे आकर जमा होने लगे। लांगविलने भी उसके लिये बहुतसी फरासीसी सेना जमा की। थोड़े समयमें दसहजार सेना उसके झण्डेके नीचे जमा हुई। इधरसे ड्यूक आफ बरलिंस भी बारह हजार सेना सज्जित उसकी मददको आपहुंचे। मानो जयलक्ष्मीने वालेस पर प्रसन्न होकर स्वयं उसके लिये सेना जुटा दी।

इधर स्काटलेन्ड-रविके पूर्व सागरमें छिपजाने पर घोर दुःखकी रात आकर सारे स्काटलेन्ड पर छागई। घरके शत्रुही स्काटलेन्ड के सत्यानाशकी जड़ थे। विश्वासघातक जातीय शत्रु सर आमेर डि वालेंसने लियन डौसकी अफसरीकी आज्ञा देकर सर जान मौन्टीथसे एडवर्डकी अधीनता स्वीकार कराई। इधर एडवर्डने भी भारी सेना लेकर इस मौके पर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाईकी। वालेसकी गैरहाजिरीमें जातीय सेनाका नायक होने लायक कोई आदमी उस वक्त न था। इससे एक एक करके सब स्काटिशकिले बेलड़ाई उनके अधिकारमें आगये। जिन्होंने एडवर्डकी अधीनता न मानी वह हाईलेन्डके पासकेटापुओंमें भागगये। विशप सिंक्लेयर बूट को भागगये। स्वाधीनताकी यादतक मिटादेनेकेलिये एडवर्डने रोम की दीवारें गिरवादीं और राजसम्बन्धी सब कागजात नष्ट करदिये। जिन्होंने उनकी अधीनतामें जमींदारी करनेसे इनकार किया उनको इङ्गलेन्डके कैदखानोंमें भेज दिया। सर विलियम डगलस इङ्गलेन्डके कैदखानेमेंही मरे। टामस रेन्डलफ, लार्ड फ्रेजर और डिउ दि हैको उन्होंने वालेसके पहरेमें इङ्गलेन्ड भेजदिया। सीथन, लोडर और लन्डिन वासको भाग गये। मलकम और केम्बल बूटमें विशप सिंक्लेयरके यहां चले गये। रामजे और क्थबेन क्राइमेस नामके एक आदमीके साथ राथ शायरके अन्तर्गत स्टाकफोर्ड शहरमें एक किला बनाकर रहने लगे। एडेम वालेस, लिन्डसे और राबर्ट बायडने आरनमें शरण ली। वालेसरूपी सूर्यके अन्तर्धान होनेसे मानो स्काटिशजातीय सूर्यमण्डलके ग्रह केन्द्रजआकर्षण विना चारों ओर बिखर गये। कसपेट्रिक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करके अपने किलेमें मौज उड़ाने लगे। एबरनेथी, सोलिस, किउमिन, सौरेनके जान, लार्ड ब्रेचिन और दूसरे और बहुतसे रईस एडवर्डसे सन्धि करके अपनी अपनी जागीर भोगने लगे। मानो एक सूर्य्य मण्डलके ग्रह सहसा अपने केन्द्रसे गिरकर दूसरे केन्द्रपर जालटके।

ऐसे गुलामीकी जंजीरसे व्यथित होकर बूटवासी देशहितैषीदलने

एक जहाज सजाकर दूतके साथ वालेसके पास भेजा और कहला भेजा कि आप आकर स्काटलेन्डके सूने सिंहासन पर बैठिये हमसे एडवर्डका अत्याचार अब सहा नहीं जाता। वालेसके साथ फलकार्कमें जो बुरा बर्ताव हुआ था उसे वह भूला न था इसलिये उसने प्रस्ताव अस्वीकार किया। जातीय दूत हताश होकर छूछा जहाज लेकर लौट आया। जातीय दलको बेहद अफसोस हुआ।

इधर स्काटलेन्डका बन्दोबस्त बेधड़क होनेलगा। एडवर्ड समस्त स्काटलेन्ड पर फिर अधिकार करके अनुगत और आश्रित जागीरदारोंको उसकी जमीन बांटने लगे। उन्होंने आर्कके अर्लको सेन्टजानस्टनकी मिलकीयत और टे और डी नदीके बीचके दुआबका सेनापतित्व दिया। लार्ड बौमन्डको हाईलेन्ड प्रदेशका सेनापति बनाकर भेजा, लार्ड क्लिफोर्डको डगलस डेलका अधिकार और दक्षिणस्काटलेन्डकी हुकूमत दी; विश्वासघातक किउमिनको समूचा गालवे प्रदेश सौंपा और लार्ड सोलिसको समूचे मार्स प्रदेशका मालिक और बारविकका सेनापति बनाया। एडवर्डने पवित्र आतिथ्यधर्मका नियम तोड़कर शरण आये हुए विशप लेमर्टन और लार्ड ओलीफेन्टको बेड़ियां पहना कर इङ्गलेन्डके कैदखानेमें भेजा। इस तरह वह स्काटलेन्डमें शान्ति स्थापन करके इङ्गलेन्ड लौटआये।

पापका धन बहुत दिन नहीं रहता। एडवर्ड जातीय विश्वासघात फैलाकर स्काटलेन्डकी छाती पर जो राजमहल, बना गये थे उनके लन्दन लौटते लौटते विश्वासघातकी विप्राकर्षणी शक्तिसे उस आलीशान इमारतकी नींव धस गई। विश्वासघातक किउमिन ने ब्रूससे यह शर्त ठहराई कि अगर ब्रूस किउमिनकी सहायतासे स्काटलेन्डकी गद्दी पावें तो किउमिन जितनी जागीर मांगेगा ब्रूस उतनी देंगे।

इस बार समस्त स्काटलेन्ड एडवर्डके विरुद्ध खड़ा हुआ। एक एक करके सब किले, फिर स्काटोंके हस्तगत होगये। केवल स्टर्लिंग किला और लकमेबेन तथा दूसरे मामूली शहर अब भी

अङ्गरेजोंके दखलमें रहे। १२९८—९९ ईस्वीमें स्काट धीरे धीरे अङ्गरेजोंके अधिकारमें गये हुए किलों पर हमले करने लगे। १२९९ में पोपसे एडवर्डकी एक सन्धि हुई। उसके अनुसार एडवर्डने स्काटिश सिंहासनके मुख्य दावेदार बेलियलको पोपके सुपुर्द किया।

वालेसके स्काटलेन्डके अभिभावकका पद त्याग करने पर किङमिन, लार्ड सोलिस और सेन्ट एन्डरूजके विशप लेम्बर्टन स्काटलेन्डके रिजेन्ट बनाये गये। रिजेन्ट लोगोंने एक बारसे अङ्गरेजोंको निकाल बाहर करनेका प्रण किया। उन्होंने बड़ी मुस्तैदीसे स्टर्लिंगका किला घेर लिया। एडवर्डने इस खबरसे डरकर जागीरदारोंको ससैन्य स्काटलेन्ड चलनेका हुक्म दिया। किन्तु जागीरदार लोग लगातार लड़ाइयोंसे थक गये थे इसलिये उन्होंने एडवर्डसे कई तरहके उज्र और बहाने करके जाना न चाहा। किन्तु एडवर्ड चुप रहनेवाले आदमी नहीं थे उन्होंने अपनीही सेना लेकर स्टर्लिंगको कूच किया। स्काटलेन्डमें पहुंच कर देखा कि स्काट उनका सामना करनेको भलीभांति मुस्तैद हैं और स्काटिश सेना अबकी उनकी सेनासे कम नहीं है। यह देख उन्होंने चुपचाप लौट आनाही अच्छा समझा। तब स्टर्लिंग किलेके निवासियोंको लाचार होकर लार्ड सोलिसके हाथमें आत्मसमर्पण करना पड़ा। स्काटिश रिजेन्टोंने सर विलियम ओलिफेन्टको स्टर्लिंग किलेका हाकिम बनाया।

किङमिनने अब अपने पापका प्रायश्चित्त आरंभ किया। अपार धन और असीम अधिकारमें उस समय स्काटिश जागीरदारोंमें कोई उसका सानी न था। उसने अपने धनके अनुसार दान देना शुरू किया। इसके दानसे प्रजा उसको बहुत मानने लगी। खासकर रिजेन्ट लोगोंने जब सुना कि वह लोग प्रजाके सौंपे हुए विश्वासका अपव्यवहार करेंगे तो वालेस प्रदेश लौटनेको तय्यार है तबसे वह बड़ीही सावधानीसे काम करने लगे।

किडमिन अपने अच्छे वर्तावसे प्रजाका विशेष प्रीतिभाजन होगया। वालेसके कहनेसे फ्रांसनरेश फिलिप फ्रांससे बहुतसा अन्न और शराब स्काटलेन्डमें भेजने लगे। किडमिन आधे दाम पर वह सब चीजें प्रजाके हाथ बेचने लगा। प्रजाने उसका नाम 'गुड स्काटिशमेन' यानी 'साधु स्काटशमेन' रखा।

उधर एडवर्डने स्वदेश लौटकर जागीरदारोंके सब उच्च मिटा कर १३०० ईस्वीकी पहली जुलाईको बड़ी भारी सेना लेकर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाई की। इसबार ८७ जागीरदार अपनी अपनी सेना सहित एडवर्डके भण्डेके नीचे आखड़े हुए। इस बारकी यात्रा समूचे स्काटलेन्डको सदाके लिये जीत लेनेके इरादेसे थी। जागीरदारोंमें ब्रिटेनके नाइट लोग, लोरेन, स्काट्‌शनरेश वेलियलके भाई अलकजेन्डर वेलियल, पेट्रिक, सपुत्र अर्ल डनवर सर साइमन फ्रेजर, ग्रेहमके हेनरी और रिचार्ड सिवार्ड प्रधान थे। इस विराट सेनाके चार भाग हुए। पहला भाग लिंकनके अर्ल, दूसरा वारेनके अर्ल जान तीसरा स्वयं एडवर्ड और चौथा युवराज एडवर्ड के सेनापतित्वमें चढ़ाई करने चला। एक रणबांकुरा सैनिक सेन्ट जान का जान—सत्रह वर्षकी अवस्थाके युवराज एडवर्डकी सहायतामें नियत हुआ।

इस महती सेनाको लेकर एडवर्डने प्रसिद्ध पहाड़ी किले केयार लावेरकको जाघेरा। उस समयके अनेक लड़ाईके यन्त्र लेकर एडवर्डने किला तोड़नेकी चेष्टाकी मगर किसी तरह काम-याब न हुए। बार बार उनकी सेना किलेपर दखल जमानेकी कोशिश करने लगी मगर हर बार पीछे हटना पड़ा। इस तरह बहुत दिन बीत गये तो भी किला हाथ न आया। किलेवाले भी लगातार रोकनेकी चेष्टा करते करते थक गये और अन्तमें प्रस्ताव किया कि अगर हम लोग सकुशल किला छोड़ कर जाने पावें तो एडवर्डको किला सौंप कर चले जानेको तय्यार हैं। एडवर्डको लाचार यह प्रस्ताव मानना पड़ा। किले वाले अस्त्र शस्त्रसे सज्जित

होकर किलेसे निकल, एडवर्डकी छावनीके सामनेसे चले गये। एडवर्ड देख कर दांतोंमें उंगली काटने लगे कि सिर्फ साठ बहादुर इतने दिन उनकी अपार सेना की सब चेष्टा व्यर्थ करके किलेकी रक्षा कर रहे थे। कोई कोई इतिहास लेखक कहते हैं कि एडवर्डने अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर उस वीर दलमेंसे कईएकको फांसी पर लटका दिया था। खैर जोहो, एडवर्ड किलेपर अधिकार करके हियर फोर्डके अर्लको उसका अफसर बनाकर ससैन्य उत्तरकी तरफ रवाना हुए।

इधर स्काटिश कमिश्नर फ्रांस राज फिलिपसे सहायता न पाकर रोमनगरमें गये। उनकी दुःख कहानी सुनकर पोपने एडवर्डको स्काटलेन्डकी स्वाधीनता छीननेसे बाज रहनेका अनुरोध करके एक चिट्ठी लिखी। एडवर्ड यह आज्ञापत्र पाकर पहले तो बड़े नाराज हुए पीछे शान्त होकर पोपको इस किस्मकी चिट्ठी लिखी कि मैं आपका पत्र पार्लीमेन्टमें पेश करूंगा। चिट्ठी भेज कर झटपट उन्होंने लिंगकालनमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई। इस सभामें १०४ बैरन उपस्थित हुए। सबके दस्तखतसे इस किस्मकी एक चिट्ठी रोमके पोपको लिखी गई कि स्काटलेन्ड मुद्दतसे इंगलेन्डकी अधीनता स्वीकार किये आता है इससे इंगलेन्ड इतने दिनकी प्रभुता छोड़ना नहीं चाहता। चिट्ठी भेजकर एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह समस्त स्काटलेन्डको रौंदने लगे। बीच बीचमें स्काटिश सेनासे उनकी सेनाका खण्ड युद्ध होने लगा। असंख्य किले धीरे धीरे उनके अधिकारमें आने लगे।

इधर अर्ल वारेनकी सेनाभी इरविंग तक बढ़ी। यहां रिजेन्टों से वारेनकी घमासान लड़ाई लगी। स्काटिश सेना बहुत थोड़ी थी, इससे अङ्गरेजी सेनाके बार बार हमला करनेसे बिखर कर भाग गई। दूसरी तरफ युवराजकी सेनाने क्लाईडसडेल, बथबेल किले और लेसमा हागो एबीको जलाकर राख कर दिया। पहले हो किलों और एबीमें बहुत स्काट जाछिपे थे; वह सब जलकर भस्म होगये।

एडवर्ड ने समूचे दक्षिणी स्काटलैन्डको हमेशाके लिये इङ्गलेन्ड के राजसिंहासनके अधीन करना ठान लिया था। उन्होंने पुराने किलोंकी मरम्मत शुरू करा दी और सब किलोंको दीवार खाई आदिसे मजबूत कराने लगे। इस कामके लिये उन्हें इङ्गलेन्डसे बहुतसे मजदूर मंगाने पड़े थे। स्वदेशानुरागके कारण स्काटिश भूमिमें उन्हें एक भी मजदूर न मिला। धन्य स्काटलेन्ड! धन्य तुम्हारा स्वदेशानुराग! इतनाही नहीं अपनी अपार सेनाके लिये रसद तक उन्हें इङ्गलेन्डसे मगानी पड़ीथी क्योंकि स्काटोंने अङ्गरेजोंसेनाको रसद न देनेकी इच्छासे बाजार बन्दकरदिये थे और अपने सब कलकारखाने इसलिये तोड़ दिये थे कि उनके देशकी बनी हुई चीज अङ्गरेज न पासकें। धन्य स्वदेशानुराग! धन्य स्वजातिप्रेम!

उन्नीसवीं सदीके अन्तमें अङ्गरेज अफगानस्थान जीत कर जैसी झंझटमें पड़े थे एडवर्ड दक्षिण स्काटलेन्ड जीत कर भी वैसेही सङ्कटमें पड़े। उस प्रदेशको शासनमें रखनेके लिये जितना खर्च पड़ने लगा उतना कोई फायदा न हुआ। इधर फिलिपने भी उनसे कमसे कम सामयिक सन्धि करनेके लिये प्रस्ताव किया। एडवर्ड के दूतने पेरिसमें जाकर इस सामयिक सन्धिकी शर्तें तय कीं। १३०० ईस्वीको ३० वीं अक्टोबरको डमफ्रीज शहरमें उस सन्धि पत्र पर स्वाक्षर किया। उस सन्धिमें स्काटलेन्डभी शामिल हुआ। उसके मुताबिक ह्वेलोमस हुइटसन्डे तक इङ्गलेन्ड, स्काटलेन्ड और फ्रांसमें शान्ति रहेगी। कोई किसीपर हस्तक्षेप न कर सकेगा।

सामयिक सन्धिका समय पूरा होतेही एडवर्डने स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई शुरूकी। वहां एक किला बनानेके लिये तय्यारी होने लगी। इधर फ्रांसनरेश फिलिपके दरबारमें स्थायी सन्धिके नियम बनाये जाते थे। अर्ल बिउकन, स्काटलेन्डके स्टुआर्ट जेम्स और रिजेन्टसोलिस और इनजेर्ल बामडो एम फ्रेविल स्काटलेन्डके प्रति निधिके तौर पर पेरिसमें मौजूद थे। एडवर्ड और फिलिप दोनों ही दिलसे शान्ति चाहते थे। एडवर्ड मनही मन यह इरादा करते थे कि फिलिपसे झगड़ा मिटतेही स्काटलेन्डका सब तरहसे शासन

कर लेंगे। इधर फिलिप भी लड़ाईके खर्चसे तंग आगये थे। किन्तु वह स्काटलेन्डको छोड़ कर सन्धि करनेको तय्यार न थे। एडवर्ड भी किसी तरह उससे राजी नहीं हुए। अनेक वाद-विवादके बाद एक फैसला हुआ। एडवर्डने आश्रित फ्लेमिंग्स लोगोंको छोड़ दिया; फिलिपने आश्रित स्काटोंको एडवर्डकी कृपा पर छोड़ दिया। इङ्गलेन्डके वाणिज्यको इससे बड़ी हानि होने पर भी एडवर्ड विकट राज्य लालसामें अन्धे होकर राजी होगये। इस सन्धिका नाम आमींसकी सन्धि है।

इस बीचमें सर साइमन फ्रेजर एडवर्डका झण्डा छोड़ कर जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़े हुए। वह बड़े प्रतिभाशाली और साहसी पुरुष थे। उनके आनेसे जातीय दलका बल बहुत बढ़ गया। उधर ग्लासगोके विशपने एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की। फ्रेजरके आनेसे यह घाटा पूरा हुआ बल्कि कुछ नफा रहा।

१३०२ ईस्वीको ३० वीं नवम्बरको डमफ्रायरकी सन्धिका समय पूरा हुआ। उसी दिन जान डी सिग्रेवके अधीन २० हजार अङ्गरेजसेना स्काटलेन्ड पर भेजी गई। इसने रसलिन नगरके नजदीक पहुंचकर छावनी डाली। वहां इसके तीन टुकड़े होकर तीन तरफको चले। यह समाचार पातेही गवर्नर जान किउमिन और साइमन फ्रेजरने आठ हजार सेना लेकर १३०३ ईस्वीको २४ वीं फरवरीको सवेरे एकाएक पहले दल पर आकर आक्रमण किया। अङ्गरेज इस अचानक आक्रमणके लिये तय्यार न थे इससे उनकी सेना भौचक्की होकर भाग गई। एक एक करके स्काटोंने तीनों दलको अच्छी तरह परास्त कर दिया। उनकी अद्भुत वीरता की कहानी सारे युरोपमें फैल गई। सर जान डी सिग्रेव बेटे और भाई सहित अपने अपने बिछौने पर सोये थे। पराजयके बाद सेना के शोरगुलसे उन लोगोंकी नींद टूटी। उठकर देखा कि वह लोग विजयी स्काटोंके हाथमें कैद हैं। सर टामस नेविल, एडवर्डके खजांची सर रल्फ डो कफरर और १६ नाइट भी कैद हुए।

उंगलियों पर गिनने योग्य थोड़ेसे स्काटोंके हाथसे सिग्रेव जैसे सेनापतिके अधीन इतनी भारी अंगरेज सेनाकी हार सुनकर एडवर्ड क्रोधसे पागल होगये। युरोपमें अपनी सेनाकी इज्जत घट जानेसे वह बहुत डरे। गई इज्जतको फेर लाने पर मुस्तैद हुए। स्काट-लेन्डके लिये जो लोहेकी जञ्जीर बना रखी थी इस बार उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे हो स्काटलेन्डके पैरमें वह बांधनी होगी। इस लिये उन्होंने स्वदेशविदेशमें जो जहां था सबसैनिकोंऔर जागीरदारों को अपने झण्डेके नीचे आकर खड़े होनेका हुक्म दिया। बेशुमार जङ्गी जहाज रसद और पोशाक आदिसे भरकर तटोंके रास्ते स्काट-लेन्डको रवाना हुए। उन्होंने स्वयं वह विराट सैना लेकर खुश्की के रास्ते उत्तरको कूच किया।

इधर फिलिपका विश्वासघात इस समय चरम सीमाको पहुंच गया। उन्होंने स्काटिशकमिश्नरोंको इस अन्तिम अवस्थामें कैद कर रखा। उन्हें फुसलाकर नजरबन्द रखा कि हम एडवर्डको स्काट-लेन्डसे अलग सन्धि करानेके लिये कोशिश कर रहे हैं। वैसे वीरों के उस समय स्वदेशमें रहनेकी बहुत जरूरत थी। तथापि फिलिप ने किसी तरह उन्हें आने नहीं दिया। ऐसा करके वह एक तरहसे एडवर्डकी मदद करने लगे।

एडवर्डके आगमनकी बात समस्त स्काटलैन्डमें फैलने नहीं पाई थी कि कमजोर दिलके स्काट अमीरोंने आगे बढ़कर एडवर्डसे माफी मांगी। जातीय विश्वासघातक सर जान मौन्टीथ उनमें अगुआ था। उसे इस विश्वासघातके बदले समूचे लेनक्स प्रदेशकी हुकूमत इनाममें मिली और अपने पहले पद (डम्बार्टनकी गवर्नरी) पर रहनेका हुक्म मिला।

पन्द्रहवीं अध्याय।

वालेसकी सङ्कटावस्था।

जब एडवर्डने असंख्य सेना लेकर तीसरी बार स्काटलेण्ड पर चढ़ाई की तब भयभीत और चौकन्ने स्काटलेण्डने वालेसको इस भीषण विपद्सागरमें एक मात्र कर्णधार समझकर याद किया। समस्त स्काटलेण्डवासियोंने एक वाक्यसे उसको स्काटलेण्डके सूने सिंहासन पर बिठानेका विचार किया। यह विचार करके उन्होंने वालेसको राजी करनेके लिये फ्रांसनरेश फिलिपके पास दूत भेजा। किन्तु फिलिप वालेसको इसमें शामिल नहीं होने देना चाहते थे इससे उन्होंने उसको इसकी खबर न होने दी।

उधर फरासीसी भूमिमें रहना वालेसको बहुत बुरा मालूम होने लगा। फ्रांस नरेशने उसे गाइन प्रदेश दिया था किन्तु उसका शासन करनेमें उसे शारीरिक और मानसिक दोनों शक्तियां खर्च करनापड़ी थीं। अङ्गरेजोंने अब भी बोर्डो नगरपर दखल रखा था। अर्ल-ग्लास्टर उस किलेके अफसर थे। वालेस दो महीने लगातार उसको घेरे रहा मगर किलेके निवासी समुद्रके रास्तेसे रसद और लड़ाईका सामान पाया करते थे इससे उसकी सब चेष्टा विफल होने लगी। अन्तमें ड्यूक आफ अरलिंसका कहना मानकर वालेस घेरा उठाकर पेरिसमें चला आया। फिलिपने बड़े आदर मानसे उसका स्वागत किया। अब वालेस स्काइनन प्रदेशमें रहने लगा। एक नाइट उसका असली अधिकारी था। वह पुश्तैनी जायदादसे वञ्चित होकर वालेससे बदला लेने पर आमादा हुआ। बहुत दिनसे मौका देख रहा था अब मौका मिला। एक दिन वालेस कुछ सहचरों सहित सैरको निकला था। उसके साथ सिर्फ तलवार और छुरे थे। नाइट बहुत आदमियों सहित जंगलमें छिपकर वालेसको

बाट देखता था। वालेसके पहुंचतेही नाइट हथियारबन्द जवानों सहित सामने आया। वालेस डरनेवाला नहीं था उसने झट तलवार निकालकर एकही चपेटमें नाइटको काट डाला। नाइटके मरनेसे युद्ध बन्द नहीं हुआ क्योंकि उसका भाई सेना लेकर लड़ने लगा।

मगर शेरके सामने भेड़के बच्चे की बहादुरी कबतक रहसकती है? बातकी बातमें वालेस और उसके साथियोंकी तलवारोंसे नाइटके भाई और उसकी छोटीसी सेना खतम होगई। सिर्फ सात आदमी भाग गये। वालेसके साथियोंमें घायल तो कई हुए पर मारा कोई नहीं गया। फ्रांसनरेश वालेसके प्रति इस आक्रमणका समाचार सुनकर बहुत दुःखित हुए और वालेसको अपने परिवारके शामिल रहनेका हुक्म दिया। कहा कि अब कोई तुम्हारा बाल नहीं छूएगा। राजा वालेसको बहुत मानते थे तोभी वालेसको बीच बीचमें अकसर ऐसी आफतमें फंसना पड़ता था।

मृत नाइट और उसके भाईके दो जाति भाइयोंने बदला लेनेके इरादेसे राजासे चुगली खाई कि वालेस शेरसे लड़कर अपना पराक्रम दिखाना चाहता है। फ्रांसनरेशने उनका असली मतलब न समझकर इस बातका अनुमोदन किया। उन्होंने जरा भी नहीं समझा कि यह लोग इस बहाने वालेसको मृत्यु देखना चाहते हैं। इससे उन्होंने कुश्तीकी तय्यारी करनेका हुक्म दिया। नियत दिनको राजा सभासदों सहित अखाड़ेमें आये। धीर चूड़ामणि वालेस भी निडर होकर अखाड़ेमें पहुंचा। जानकी उसे ज़रा परवा न थी परन्तु इस बातका सोच हुआ था कि फ्रांसनरेशने उसकी मौतके मामलेमें कैसे हामी भरी। वह नहीं जानता था कि राजाको धोखा दिया गया है। सबने उसको बख्तर पहनकर कठघरेमें घुसनेका अनुरोध किया। उसने अभिमानपूर्वक कहा कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा। यह कहकर वह नृसिंहमूर्त्ति तलवार हाथमें लिये कठघरेके भीतर गई। फौरन कठघरेका दरवाजा बन्द हो

गया। उसी वक्त शेर गर्जकर उस पर टूट पड़ा। किन्तु वीरकेसरी वालेस भी डरनेवाला नहीं था। उसने शेरका अयाल पकड़कर इस जोरसे तलवार चलाई कि पलभरमें शेरके दो टुकड़े होगये।

अब वालेसके अभिमानकी आग भड़क उठी। उसने राजाकी तरफ लाल आंखें करके कहा—"महाराज! क्या आश्रित स्काटको इस तरह मरवा डालनाही आपका इरादा था? अगर आपका यही दिली इरादा है तो मैं डरता नहीं। आपकी पशुशालामें जितने पशुराज हैं एक एक करके सबको लानेका हुक्म दीजिये मैं इसी कराल तलवारसे हरेकको काट डालूंगा उसके बाद आज आपसे बिदा लूंगा। इतने दिन आपने जो मुझे शरण दी थी उसके लिये आपका कृतज्ञ रहूंगा। किन्तु अब मेरे यहां रहनेकी जरूरत नहीं है। पशुओंसे लड़नेके लिये वालेसका जन्म नहीं हुआ है। स्काट-लेन्ड अभी शत्रुओंहीके अधीन है। वहां वालेसकी तलवार शत्रुओं को मारनेके काम आवेगी। आज मैं आपसे और फ्रांससे इस जन्म के लिये बिदा लेता हूं।" यह कहकर वालेस चुप हुआ। उसकी लाल आंखोंसे आग बरसने लगी। सबलोग सन्नाटेमें आगये।

फ्रांसनरेशने इसका गूढ़ मतलब न समझकर वालेससे स्पष्ट हाल पूछा। उससे सुनकर उन दो पापियोंकी बुरी नीयत समझी। उनके बहुत तंग करने पर उन्होंने अपना दोष स्वीकार किया। फ्रांसनरेशने उसी वक्त उनको फांसीका हुक्म दिया और वालेसका शरीर कोई न छूए इसके लिये खबरदार हुए। किन्तु वालेसका मन अब उस भूमिमें नहीं लगा। स्वर्गादपि गरीयसी जन्म-भूमि आज उसे याद आई। इतने दिन वह मानो सोता था, इतने दिन अभिमानने उसकी गहरे स्वदेशानुरागको ढक रखा था। इतने दिन पर उसकी मोहनिद्रा टूटी। देखा कि फ्रांसके लिये वह प्राण तक देनेको तैयार था तथापि फ्रांसने उसे अपना नहीं समझा। वह अपनी भूल समझकर फिर जन्मभूमिके लिये जीवन उत्सर्ग करनेको तत्पर हुआ। जन्मभूमि शत्रु के चरणों तले रौंदी जाती

है—इसकी याद फिर उसका कलेजा फाड़ने लगी। अबके प्रतिज्ञा की कि या तो जननीका उद्धार करूंगा नहीं तो प्राण दे दूंगा। अबके उसकी अन्तिम साधना है—अन्तिम आत्मवलि है।

फ्रांसनरेश फिलिपने जब देखा कि वालेस् स्वदेश लौट जानेका पक्का इरादा कर चुका है तब उन्होंने वालेसको स्वदेश भेजनेके लिये जितने पत्र पहुंचे थे वह सब उसे दिखाये। वालेससे अब रहा नहीं गया। स्वदेश फिर उसकी सेवा ग्रहण करनेको व्याकुल है यह सुनकर फिर उसका चित्त उत्तरको उड़ा। वह राजासे बिदा होकर एक मात्र विश्वासी मित्र लांगविलको साथ ले स्काटलेन्डको रवाना हुआ। वह लोग स्लीस बन्दरमें जहाजपर सवार हुए और अर्ल साउथ बन्दरमें जाकर उतरे। वालेसने फलकार्क युद्धके बाद १२९८ ई०के अन्तमें स्काटलेन्ड छोड़ा था; फ्रांसमें कुछ अधिक दो वर्ष रहकर १३१० में स्वदेश लौट आया। फ्रांसनरेश फिलिपको उसके वियोगसे बहुत अफसोस हुआ। वह वालेसको दिलसे प्यार करते थे इसीसे स्काटलेन्डसे बारबार अनुरोध पाकर भी उसे भेजना नहीं चाहा और इस ख्यालसे कि खबर पाकर वालेस उन्हें छोड़कर चला न जाय, उन्होंने वह सब चिट्ठियां छिपा रखीं। किन्तु विधाताका लेख कौन मिटा सकता है? मातृभूमिके उद्धारके लिये वालेसकी आत्मवलिकी जरूरत पड़ी थी। इसीसे आज वालेसने प्रियबन्धु फिलिपका बहुत कुछ आग्रह टालकर भी स्वदेश की यात्रा की। भाल लिखि लिपि को सक टार?

अर्लसाउथमें उतर कर वालेसने एल्को नगरकी यात्रा की। वहां अपने जाति भाई क्राफोर्डके गोदाममें जाकर छिप रहा। गोदाम ऐसा बना था कि किसीको उसके आनेकी खबर न हुई। सिर्फ उसमें एक छेद था। वही नदीमें आनेजानेका रास्ता था और उसी रास्तेसे इन लोगोंके पास खाना भेजा जाता था। वालेस और लांगविल यों उस गुप्तस्थानमें चार पांच दिन रहे। क्राफोर्ड उनके लिये अधिक रसद सेन्ट जान्सटनसे लाते थे। अङ्गरेजोंने देखा कि वह अपनी

जरूरतसे ज्यादा रसद लेजाते हैं। उन्हें शक हुआ और उन्होंने उनको कैद कर लिया। पीछे जब सुना कि वालेस आया है तो उसका पता लगानेके लिये क्राफोर्डको छोड़ दिया। जिस रास्ते से क्राफोर्ड गये अङ्गरेज सेनापति बटलरने आठसौ सेना लेकर उन का पीछा किया। यह सुनकर वालेस क्राफोर्ड पर बहुत बिगड़ा— कहा कि तुमने अंगरेजोंके हाथमें हम लोगोंको सौंपकर स्वजातिकी शत्रुता साधी? किन्तु क्राफोर्डने सब हाल बताकर उसको शान्त किया और उन लोगोंको दूसरी जगह भाग जानेकी सलाह दी। मगर वालिसने भागनेसे अस्वीकार किया। वह क्राफोर्ड सहित २० सहचर लेकर उस प्रकाण्ड अंगरेज सेनाका मुकाबला करनेको मुस्तैद हुआ।

सोलहवां अध्याय।

वालेसकी गिरिफ्तारी।

वालेसने पेड़ोंकी डालियोंसे एक पुख्ता किला बनाया और उसमें बैठकर अङ्गरेजसेनाका रास्ता देखने लगा। देखते देखते अङ्गरेज सेना क्राफोर्डके गोदामके सामने आपहुंची। अङ्गरेज सेनापति बटलरने आकर पहले क्राफोर्डकी स्त्रीका हाथ पकड़ा और पूछा 'स्काट कहां छिपे हुए हैं बतादो नहीं तो अभी तुम्हें मार डालूंगा।' अङ्गरेज सेनापतिका यह जघन्य व्यवहार देखकर क्रोधसे अधीर हो वालेस किलेसे निकल आया और कहा—"नीच! स्त्रीके ऊपर हाथ लगाना वीरका काम नहीं है अगर साहस है तो आ—आज पृथिवी या तो बटलर शून्य होगी या वालेस-शून्य"।

वालेसकी कड़ी बातोंसे बटलरका दिलीदाह भड़क उठा। युद्धके लिये ललकारनेसे बटलर सेनासहित वालेसके सामने आया।

लाचार वालेसको काठके किलेमें घुसना पड़ा। वालेसने चाहा था कि आज द्वन्द युद्धमें बटलरसे जोरआजमाई करेंगे किन्तु कापुरुष बटलरने द्वन्द युद्धका साहस न करके सेनाके सहारे असहाय वालेसको अभिमन्यु-वध करना चाहा। लेकिन उसका इरादा व्यर्थ हुआ। थोड़ेसे स्काट अलौकिक वीरतासे उस काठके किलेकी रक्षा करने लगे। किला तोड़नेकी कोशिश करनेमें १५ अङ्गरेज मारे गये। तब बटलर अपनी सेनाके तीन भाग करके तीन तरफसे किले पर आक्रमण करनेके इरादेसे अचानक मैदानसे गायब होगया। वालेसने उसका गूढ़ अभिप्राय समझ कर अपने छोटे दलके भी तीन भाग किये। लांगविल और ह्विलियमके अधीन छः छः आदमी देकर और स्वयं सिर्फ ५ आदमी लेकर किलेकी रक्षा करने लगा। वह किलेके जिस तरफ था बटलर स्वयं उधर ही बढ़ा। कुछ देर घोर युद्धमें दोनों सेना अद्भुत वीरता दिखाती रही किन्तु मस्त हाथीके साथ गीदड़ोंका दल कबतक लड़ सकता है? अङ्गरेज सेना लड़ाईमें शत्रुकी अजीब बहादुरीसे भौचक होकर भागी। इधर तारा नाथ ताराओं सहित गगनपट पर आकर विराजमान हुए। बटलर और उसकी सेना अपनी छावनीमें खाना पीना करने लगी। उधर स्काटोंने सिर्फ झरनेका पानी पीकर अपने काठके किलेमें रात बिताई।

प्रधान अङ्गरेज सेनापति अर्ल यार्कने बटलरको कहला भेजा कि हम तुम्हारी मददको जल्द आते हैं जबतक हम न पहुंचें तब तक तुम अपने किलेसे न निकलना। किन्तु बटलर वालेसको पकड़नेकी बहादुरी लेनेके लिये इतना उतावला होरहा था कि उसने अर्लका कहना न माना। उसने वालेससे एकान्तमें भेटकर उसे सलाहदी कि मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करना। वालेसने कहा—आपने मेरे पिता और दादाको मार डाला है अब मेरी सिर्फ इतनी बात मान कर उस पापका कुछ प्रायश्चित्त कीजिये। यह मैं नहीं कहता कि आप अभी आत्मसमर्पण कीजिये। आप

जब आत्मरक्षासे असमर्थ होकर आत्मसमर्पण करनेकी जरूरत समझें तब मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करें—मैं सिर्फ इतनाही चाहता हूं।" वालेस बटलरका यह निष्ठुर अभिप्राय सुनकर हंस पड़ा और बोला कि समूचा इङ्गलेन्ड जमा होकर भी मुझे नहीं हरा सकेगा।

वालेसको 'मंत्र सिद्ध हो या प्राण जाय' की प्रतिज्ञापर बद्धकटि देखकर बटलर रातभर उसका किला घेरे रहा। रात बीती किन्तु अन्धेरा दूर नहीं हुआ रातके अन्धेरेके बदले कुहासा छागया। उस अवसरमें स्काटिशवीर काठके किलेसे निकल कर अङ्गरेजी छावनी पर टूट पड़े। अङ्गरेजोंको कुछ दिखाई न पड़ा। असंख्य अङ्गरेज मारेगये। सेनापति बटलर वालेसकी तलवारके एकही वार से यमपुर पधारा। उसकी मृत्यु से अंङ्गरेजसेना डरके मारे लड़ाई छोड़कर भाग गई। स्काट इस मौके पर मिथवे बनको चल दिये। यहां इफरातसे रसद मौजूद थी इससे उनको और कोई तकलीफ न रही। यहां वालेसके दो एक साथी दलबल सहित उससे आमिले। वहां एक रात रहकर जातीय दल बार्नेम बनको रवाना हुआ। वहां पहुंच कर प्राणदण्डकी आज्ञा पाये हुए स्क्वायर रुथवेनसे मिल गये। यह सम्मिलित सेना वहांसे एथोल और एथोलसे लोरन गई। रास्तेमें इन लोगोंके कष्टकी सीमा न रही। रास्तेके दोनों तरफके निवासियोंकी, दुर्भिक्षके मारे हड्डी हड्डी हिलती थी। लगातार लड़ाइयोंसे खेती वाणिज्य आदि सब बन्द होगये हैं। कहीं खानेकी कोई चीज नहीं मिलती। खेतोंमें फसल नहीं। दुकान हाट बाजार सब बन्द हैं। देशकी यह दुर्दशा देख कर वालेसका कलेजा टूक टूक होने लगा। विशेष कर अपने सहचरों का दुःख देखकर उसका धैर्य्य जाता रहा। उन्हें भूखों मरते देख उसने लम्बी सांस लेकर कहा—भाइयो! मैं ही तुम लोगोंके इस कष्टका कारण हूं। आज्ञा दो अब मैं जाता हूं। अगर तुम्हारा कष्ट दूर करसका तो अच्छाही है नहीं तो तुम्हें फिर इस तरह

बांध कर नहीं रखूंगा, यह कह कर अपने लौटने तक उनको वहां ठहरा कर वह अन्तर्द्धान होगया।

वालेस पहाड़ी चोटियां लांघ कर एक खेतमें पहुंचा। उसकी यातनाकी सीमा न थी। वह सुस्त होकर एक पेड़के नीचे हाथपर गाल धर कर सोचने लगा। मन ही मन अपनेको धिक्कार देकर कहने लगा—'पामर! तेरेही दोषसे तेरे साथियोंको आज यह कष्ट है। स्काटलैन्डको स्वाधीन करनेकी चेष्टामें तू इस तरह आत्मोत्सर्ग करने वाले वीरोंकी आहुति देने चला है! किन्तु तेरी आशा वृथा है! विधाताने तेरे भाग्यमें यह सौभाग्य नहीं लिखा। शायद तुझसे किसी योग्य और अधिक संभ्रान्त मनुष्यके ललाटमें यह सौभाग्य लिखा है। भाइयो! मेरेही लिये तुम भूखों रह कर नींद छोड़ कर घास पात पर पड़ कर बड़े कष्टसे दिन काट रहे हो ईश्वरसे मैं मनसा वाचा कर्मणा प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा वह दुःख दूर हो। मैंही तुम्हारे इस दुःखका मूल हूं; इसलिये मैं इसका प्रायश्चित्त करूंगा। मैं अकेले सबका दुःख भोगूंगा।' ऐसी आत्मग्लानि पूर्ण चिन्तामें निमग्न होजाने पर शान्तिदायिनी निद्रा-देवीने आकर उसे गोदमें लेलिया। वह वीर देह पेड़के नीचे ढुलक गई!

तीन दिनसे तीन अङ्गरेज और दो स्काट वालेसके पीछे पीछे घूमते थे। वालेसको जागतेमें पकड़नेकी किसीको हिम्मत न हुई। एडवर्डने प्रकाश्य युद्धमें वालेसको हरानेसे असमर्थ होकर अन्तमें यह नारकी उपाय निकाला था। इनामका लोभ देकर उसको पकड़ने के लिये गुप्तचर नियत कियेथे। यही पांच आदमी एडवर्डके नियत किये गुप्तचर थे। इनपांचोंके साथ एक लड़का था वह उनके लिये भोजन जुटाया करताथा। यह पांचों पासकी एक झाड़ीमें छिपे थे। जब देखा कि वालेस नींदमें बेखबर सोगया है तब उन्होंने वहांसे निकलकर उसे पकड़ा! सोते शेरको जगानेसे वह जैसे गर्ज उठता है वैसेही वालेस जागकर गर्जने लगा और एक पैतरेमें जो सबसे

ज़बरदस्त था उसके पास आपहुंचा और उसको पकड़ कर उसका सिर इस जोरसे पेड़की डालो पर पटका कि उसकी खोपड़ी चूर चूर होगई। इसके बाद अपनी तलवार लेकर बाकी चारों पर हमला किया और दोको पलभरमें काट गिराया। बाकी दो प्राण लेकर भागने लगे किन्तु वालेसने दौड़कर उन्हें भी मारडाला। सिर्फ लड़का बचा। उसने कांपते कांपते वालेसके चरणोंमें गिर कर क्षमा मांगी। कहा कि मैं बेसमझे बूझे इन लोगोंके साथ आया था और सिर्फ खाना जुटानेके सिवा किसी काममें शामिल न था। वालेस उसे उसके सामान सहित अपने साथियोंके यहां लेगया और उनसे सारा हाल कह सुनाया। वह लोग चौंके और डरे और वालेसको इस तरह अकेले कहीं जानेके लिये दूसने लगे।

उन्होंने उस लड़केसे उस प्रदेशको हालत पूछ कर जाना कि रैनक शहरमें गये बिना कुछ रसद मिलनेकी उमेद नहीं। इस लिये वह लोग उसी रातको वहांसे कूच करके रात रहतेही रैनक में पहुंचे। उस थोड़ेसे सैनिकोंको लेकर ही वालेसने उसी रातको किले पर हमला किया। उसकी जबरदस्त ठोकरसे किलेका दरवाजा टूट गया जिसकी आवाजसे किलेके सब लोग जाग गये किलेके अध्यक्ष और दूसरे लोग स्काट थे—जानके डरसे अङ्गरेजों की शरण आये थे। अब खुशीसे वालेसके भण्डेके नीचे आगये।

देशके आदमियोंका मन जाननेके लिये वालेसने दूसरे दिन जातीयझण्डा उठाकर अङ्गरेजोंके विरुद्ध युद्धघोषणा करनेका इरादा किया। सवारोंके लिये अंगी घोड़े संग्रह किये गये। इस छोटी सी जातीय सेनाने सजधज कर डनकेल्डको कूच किया। उसके आनेकी खबर पातेही वहांके विशप सेन्ट जानस्टनको चलदिये। डनकेल्ड किलेमें जितने अङ्गरेज थे सब स्काट वीरोंके शिकार हुए। किला लूटकर स्काटोंने बहुतसी बहुमूल्य चीजें पाईं। पांच दिन वहां आराम करके वालेसकी सलाहसे वह रासनगरको रवाना हुए। वालेसने इस उमेदसे उधरको यात्राकी कि वहां विशप सिंक्लेयर

आदि बहुतसे स्काट उससे आमिलेंगे। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ने लगे त्यों त्यों अङ्गरेज चारों ओरसे भागने लगे। किसीको उनका सामना करनेका साहस नहीं हुआ। वालेसकी सेनामें धीरे धीरे असंख्य स्काट आमिले। उसकी सेना सात हजार होगई। उस को लेकर उसने एवर्डीनकी कूच किया। अङ्गरेज यह खबर पाकर एवर्डीनको बियावान करके चले गये। रुथवेन, सिंक्लेयर लिन्डसे, बायड, एडम वालेस वैरन, रिकर्टन, सीटन, लोडर, लुन्डिनके रिचार्ड आदि, वालेसके सब सहचर धीरे धीरे अपनी सेना सहित उससे आमिले। एवर्डीनसे स्काट सेना सेन्ट जानस्टन में पहुंची। अङ्गरेज जिधर रास्ता मिला उधर भागे। डंकेल्डके विशप सेन्ट जानस्टनसे लन्दन भागगये। उन्होंने एडवर्डसे अङ्गरेजों की यह दुर्दशा कही। एडवर्डने सलाह लेनेके लिये आमिर डी वालेंसको बुला भेजा।

एडवर्ड अब हताश होगये। उन्होंने देखा कि बलसे वालेस परास्त नहीं होगा। वह एक बार हरावेंगे फिर वालेस जोर पकड़ कर मैदानमें खड़ा होगा। बलमें हार कर एडवर्डने अबके रिशवतसे कामलेनेका विचार किया। यह इंगलेन्डका खास अपना ईजाद किया हुआ पेशा है। विश्वासघात कराके उसका फल लूटना इंगलेन्डकी हमेशाकी चाल है। एडवर्डको यह नारकी उपाय सूझा कि वालेसके साथियोंको रिशवतसे मुट्ठीमें करें और उन्हींके जरिये सोते समय वालेसको पकड़वावें। उन्होंने विश्वास-घाती सर आमिर डी वालेंसको यह काम सौंपा। वह इसकामके लिये मनमाना खर्च करनेका हुक्म पाकर स्काटलेन्ड लौट आया। वालेंसने स्वदेश लौटकर सर जान मौन्टीथको इसके योग्य समझकर बुलाया। सरजान मौन्टीथ लेन्कसकी मिलकियत और तीन हजार अशर्फियोंके बदले प्रिय सहचर वालेसको अङ्गरेजोंके हाथ पकड़वा देने पर राजी हुआ। एक प्रतिज्ञापत्र लिखा गया। वालेंस मौन्टीथका लिखा हुआ यह प्रतिज्ञा पत्र बड़ेहर्षसे एडवर्डके पास लेगया। उसे देख कर एडवर्ड बेहद खुश हुए।

इधर वालिस सेन्टजानस्टूनने किला घेरे हुआ था। अङ्गरेज बड़ी बहादुरीसे किलेकी रक्षा करते थे। एक दिन सबेरे पांच हजार अङ्गरेज किलेके दक्षिणी दरवाजेसे स्काटव्यूह तोड़कर निकले, किन्तु स्काटिश वीरोंने पलभरमें उनके सामने आकर उन्हें किलेमें लौट जानेको मजबूर किया। स्काट अङ्गरेजोंको खदेड़ कर किलेमें गये। डंडास हमलेके जोरमें साथियोंको छोड़ कर किलेमें घुस गये। अङ्गरेज झट उन्हें पकड़ कर सेनापति अर्ल यार्कके पास लेगये। उन्होंने वालिसकी कृतघ्न बनानेके लिये डन्डासको दूतके साथ उसके पास भेजा। सेनापतिने सोचाथा कि मेरे इस बर्त्ताव पर लट्टू होकर वालिस एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करेगा। किन्तु वालिस किसी तरह अपने उद्देश्यसे हटने वाला नहीं था। उसने इस अच्छे बर्तावके बदलेमें अङ्गरेज सेनापतिके पास धन्यवाद भेज दिया।

स्काट वीरोंकी वीरताकी कहानी धीरे धीरे स्काटलेन्डमें सर्वत्र फैलने लगी। अर्ल फाइफ और फाइफके शेरिफ अपने दल सहित आकर जातीय पताकाके नीचे खड़े हुए। सम्मिलित स्काटसेनाने बड़े वेगसे स्काट किले पर हमला किया। सैनिक दीवार फांद कर किलेके भीतर घुसगये। उनकी तलवारोंसे क्षणभरमें हजारों अङ्गरेज मारे गये। पीछे अङ्गरेज-मेधयज्ञ आरंभ हुआ। वालिसने पहला उपकार यादकरके अर्ल यार्कका प्राण बचानेके लिये उनके पास दूत भेजा। जापे दूत हुआ। वह अर्ल यार्कके लिये एक छकड़ा लाया। उनको स्काटिश सैनिककी पोशाक पहना कर गाड़ी पर चढ़ाया और राह खर्च देकर बिदा दिया। स्त्रियों और लड़के लड़कियोंको भी रिहाई होगई। इस विजयने काम किया वालिसने अब स्काटोंको जातीय झण्डेके नीचे खड़े होनेके लिये आह्वान किया।

यह जय घोषणा करके वालिस दक्षिणकी तरफ रवाना हुआ। राबर्ट ब्रूसके भाई एडवर्ड ब्रूस गत वर्ष आयर्लेन्डमें थे। वह वहांसे

कुछ सैनिक लेकर आये थे। उन्होंने असंख्य अङ्गरेजोंको लड़ाईमें हराया और मारा और हुइगटन् किले पर अधिकार कर लिया। लकमेबेन शहरमें वालेस और एडवर्ड ब्रूसने विशेषवीरता दिखा कर परस्पर प्रेमालिङ्गन किया। एडवर्ड ब्रूस उसी जगह पर जातीय अधिनायक बनाये गये। वालेसने यह भी प्रतिज्ञाकी कि अगर राबर्ट ब्रूस स्काटलेन्डके सिंहासन पर बैठनेसे अस्वीकार करेंगे तो वह सिंहासन एडवर्ड ब्रूसको दिया जायगा। वालेस यह प्रतिज्ञा करके कर्मनककी काली गुफामें चला गया।

इधर वालेस और एडवर्ड ब्रूसका सन्धि समाचार, इङ्गलेन्डनरेश एडवर्डके कानों तक पहुंचा। उन्होंने तीनबार स्काटलेन्डको पराजय करके वहां अपना अधिकार जमाया था। उनके चले आने पर तीनों बार स्काटलेन्डने सिर उठाया। यह देख कर एडवर्डने उस पर फिर चढ़ाई करनेका इरादा छोड़ दिया। उन्होंने देखा कि जब तक वालेस जीतारहेगा तब तक स्काटलेण्डसे उनको कुछ आशा नहीं है। इसलिये उन्होंने मौन्टीथको वालेसको पकड़वा देनेकी प्रतिज्ञा याद दिलाई। मौन्टीथ नेएडवर्डके बहकानेसे अपने भानजेको वालेसके पास नौकरी करनेके लियेभेजा। वह युवक वालेस के पास जाकर नौकर हुआ। स्काटलेण्डमें शान्ति और स्वाधीनता स्थापित करनेकी चिन्तामें लगे रहनेसे वालेसने उस युवककी बदनीयती नहीं समझी और उसे अपनी सेवामें रखलिया।

स्काटलेण्डसे अङ्गरेजोंको एकादम निकाल कर वालेसने विश्वासी दूत जापको एक पत्र देकर ब्रूसके पास इंगलेण्ड भेजा। लिखभेजा कि स्काटलेन्डका सिंहासन खाली पड़ा है आप आकर उस पर बैठिये इससे स्काटलेन्डके स्त्रीपुरुष बूढ़े बच्चे सब सुखी होंगे। कोई प्रतिद्वन्दी नहीं है। ब्रूस इस समाचारसे बहुतप्रसन्न हुए और वालेसको इसके लिये धन्यवाद देकर सलाह पूछी कि कैसे मैं चुपके चुपके इंगलेन्डसे भागूं आऊं। यह भी लिखा कि तुम ग्लासिगो मूर तक आओ। १३०५ईस्वीके जुलाई महीनेकी पहली

रातको मैं चुपके वहां आकर तुमसे मिलूंगा। वालेसको भी अकेलेही छिपकर वहां आनेका अनुरोध किया।

वालेस डरको कोई चीज नहीं समझता था। वह उस नियत रातको सिर्फ कार्ले और मौन्टीथके भेजे हुए उस युवकके साथ ग्लासगोमूरमें गया। वहं ब्रूसकी बाट देखते शहरके बाहर टहलने लगा। इधर विश्वासघातक मौन्टीथ साठ हथियार बन्द जवानों सहित उसी रातको ग्लासगोमूरमें जा पहुंचा। वह ग्लासगोगिर्जे के नजदीक किसी मकानमें आदमियों सहित छिपारहा। वालेस भी देर तक ब्रूसका रास्ता देख उसके आनेसे निराशहोकर प्रिय मित्र कार्लेके साथ किसी पान्यशालामें टिकने चला गया। आधीरात होगई, नींदमें अलसाकर वालेस औरकार्लेसोनेके लिये एक कोठरीके अन्दर गये। युवक नौकर बाहर पहरा देने लगा। जब वह दोनों नींदमें बेखबर सोगये तब, उस विश्वासघातक नौकरने धीरे धीरे अन्दर जाकर उनके हथियार निकाल लिये। फिर मौन्टीथको जाकर खबर दी कि वह लोग अब काबूमें हैं। मौन्टीथने उसीवक्त आदमियों सहित आकर वह मकान घेर लिया। घरमें जाकर सोये हुए कार्लेको दरवाजे पर लाकर मार डाला। इसके बाद धूर्त्त सोयेहुए शेर सिंहको रस्सियोंसे बांधने लगे। वालेसकी नींद टूट गई। वह उछल कर अलग जा खड़ा हुआ और अन्धेरे में अस्त्र शस्त्र टटोलने लगा मगर कहीं कुछ नहीं पाया। तब सामने जिसको पाने लगा उसको उठाकर पटकने लगा। इस धर पटकमें कई अङ्गरेज मारे गये। मुश्किल देख कर मौन्टीथने छलसे काम लिया; कहा कि अङ्गरेजोंने बड़ी भारी सेनासे तुम्हें घेर लिया है उनके हाथसे तुम्हें हिकमतसे बचानेके लिये मैं आया हूं मेरे साथ कैदी की तरह चलोगे तो वह लोग कुछ न बोलेंगे। मैं तुम्हें उनसे बचाकर तुम्हारे घर छोड़ आऊंगा। मौन्टीथ एक समय वालेसका प्रिय सहचर था। उसने यह बातें ऐसी सहानुभूतिके साथ कहीं कि वालेस सन्देह न कर सका। तथापि

उसके विश्वासकेलिये मौन्टीथसे शपथ कहाया। मौन्टीथने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साची दे शपथ किया मैं कि कभी वालेसको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा। सीधे सादे वालेसने मौन्टीथके छलमें पड़ कर दोनो हाथ रस्सीसे बांधनेको कहा। आपसे गिरफतार हुए बिना उस शेरको कोई पकड़ने वाला न था। हाथ बंध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको ढूंढ़ा पर उसका कुछ पता न पाया। तब वह समझा कि मैं विश्वासघातकके हाथमें पड़गया हूं। तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा। किन्तु अपनी चिन्तासे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अधिक हुई। वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआ कि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी।

इधर वालेसके हित मित्रोंको इस बातकी कुछ खबर न थी। वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ। मौन्टीथ इतनी फुर्तीसे उसेलेगया कि वह लोग सवेरे कार्लाइलमें जा पहुंचे और वहां जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेन्सके सपुर्द किया। उन्होंने वालेसको शहरके कैदखानेमें कैद कर रखा। तभीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है। बुरी घड़ीमें वालेस अकेले ब्रूसकी अगवानीको निकला था। बुरी घड़ीमें उसने विश्वासघातक मौन्टीथका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था! हाय क्या हुआ! अब कौन स्काटलेन्डका उद्धार करेगा?

सत्रहवां अध्याय।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड।

कार्लाइलसे कारागारसे वालेसको लेकर मौन्टीथने इङ्गलेन्डकी यात्रा की। वह और वालेस कालेरंगकी गाड़ीपर सवार हैं और दो सौ सवार अङ्गरेज उनके पीछे हैं। इस तरह वह कैदीकी गाड़ी

क लाईलसे दक्षिणको रवाना हुई। गाड़ी बड़ी तेजीसे दौड़ने लगी मानो स्काटिश सूर्य्य उस दिन दक्षिण मार्गमें अस्त होनेके लिये उधरही चला। अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेन्डके वक्षस्थलसे उसका कलेजा काढ़कर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया। सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया। सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया। जिसने स्काटलेन्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाड़कर खून दिया था, जन्मभूमिके पुनरुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेन्डको सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मबलि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढ़े आज घर घर रोरहे हैं।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा। वह लकमेबेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई। वहां दोनो स्काटलेण्डके राजा रावर्ट ब्रूसकी बाट देखने लगे। बेनक बरनके समरमें लांगविलने रावर्ट ब्रूसकी बगलमें खड़े होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये बड़ीही बहादुरीसे लड़ाई की थी। ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये। एडवर्ड ब्रूसने वालेसका अपार गुण बखान कर भाईको कुछ ढारस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे।

इधर काली गाड़ने वालेसको लेकर यथासमय इंगलेण्डमें पहुंची। एडवर्डकी खुशीका पारावार न रहा। वालेस १३०५ ईस्वी की ५ वीं अगस्तको गिरिफ्तार करके २२ वीं अगस्तको लन्दन लाया गया। १७ दिन रास्तेमें लगे। रस्तेमें इङ्गलेण्डके स्त्री पुरुष बूढ़े बालक अकचका अकचकाकर स्काटिश वीरको देखते थे। वालेसके साथ बहुत आदमी लन्दनमें आये। उस दिन

फेन्चर्चस्ट्रीटके किसी गृहस्थके मकानमें वह रखा गया। दूसरे दिन घोड़े पर सवार कराके वेस्टमिनिस्टर हालमें लाया गया। इंगलेण्ड के ग्रेन्ड मार्शल सरजान डिग्रेव, लन्दनके रिकार्डर जिउफ्रे, मेयर शेरिफ, अल्डरमेन आदि बड़े बड़े आदमी उसके साथ गये। पीछे पीछे बंशुमार सवार और पैदल सेना गई। एडवर्डकी घबराहटका ठिकाना न था। जज लोग वालेसको दोषी ठहरावें इसके लिये वह उस दिन बारबार जजोंकी संख्या बदलने लगे। कभी स्थिर किया कि तीन जज विचार करेंगे कभी चार और कभी पांच जजोंको चुना। कभी कहाकि दोसे कोरम होगा कभी तीनसे कोरम ठहराया। हालनके दक्षिणी मंच पर वालेस बिठाया गया। वालेस घमण्डसे कहा करता कि मैं वेस्टमिनिस्टर हालमें बैठकर इङ्गलेण्डका राजमुकुट पहनूंगा। इसीसे आज व्यङ्गसे उसके सिर पर लोरेल मुकुट रखा गया। एडवर्ड ऐसे कठिन समयमें भी वालेसको ईस तरह मर्मवेदना पहुंचानेसे जरा नहीं हिचके। अङ्गरेजकी यह आदत पुरानी है। एक दिन वेल्स पेट्रियट लियोलिनका भी इसी तरह मर्मान्तुद अपमान किया गया। उसका सिर काट कर लन्दन टावरके ऊपर लटका कर उसके ऊपर आइवी लताका मुकुट रखा गया। वालेसके वधके बाद सर साइमन फ्रेजरकी भी यही दुर्दशा की गई थी।

वालेसपर राजविद्रोहका अभियोग लगाया गया। सिग्रेव, मालुगी, सेनुविच, राकबेल और ब्लिन्ड नामके पांच जजोंने विचार आरम्भ किया। विचारका फल पहलेहीसे तय होचुका था तोभी जजोंने दिखावेके लिये वालेससे पूछा कि तुम पर राजविद्रोहका अपराध लगाया गया है तुम दोषी हो या निर्दोष? वालेसने उत्तर दिया मैं निर्दोष हूं क्योंकि मैं कभी इंगलैन्ड नरेशकी प्रजा नहीं था इसलिये राजविद्रोहका अभियोग मेरे ऊपर नहीं लग सकता। जजोंने वालेसके इस उचित उत्तरपर कान नहीं दिया। अन्तर्जातीय नियमके अनुसार वह राजद्रोहके अपराधसे

दण्ड नहीं पासकता। यह बात दुनिया समझ गई किन्तु जजोंने समझकर भी नहीं समझा। क्योंकि उन्होंने एडवर्डके पास अपना कर्तव्यज्ञान और धर्म्मबुद्धि बेच दी थी। इसीसे आज उन्होंने विचारककी मर्य्यादा और जिम्मेदारी पर लात मारकर विड़म्बना पूर्ण लोकदिखाऊ विचार किया। इसीसे आज उन्होंने नीचे लिखे युक्ति और न्यायरहित फैसला और दण्डाज्ञा सुनाई। उन्होंने विचारासन पर बैठकर एडवर्डने जो कुछ सिखाया था वही कहके विचारकको जवाबदिहीसे पीछा छुड़ाया। फैसलेका मतलब यह है—स्काटलेन्ड नरेश जान बेलियलके राज्यच्युत होने पर—एडवर्डने स्काटलेन्डको जीता और अपने अधिकारमें किया। स्काटलेन्डको पुरोहित मण्डली अर्ल और बेरन तथा दूसरी प्रजाने उनकी अधीनता मानली है। उन्होंने स्काटलेन्डमें शान्ति फैलाई है और वहांकी रीतिनीतिके अनुसार शासन प्रणाली जारी की है। यह सब होते हुए भी वालेसने बेशुमार फौज जमा करके अङ्गरेज कर्म्मचारियों पर हमला किया है, लानार्कके शेरिफ हेसिलरीगको मारकर उसकी लाशके टुकड़े टुकड़े किये हैं, स्काटलेन्डका अकेला मालिक बनकर वहां अपना हुक्म चलाया है, पार्लीमेन्ट बुलाई है, फ्रांस नरेशसे सन्धि करनेकी कोशिश की है नरदम्बरलेन्ड केम्बरलेन्ड और वेस्टमोरलेन्डको तहसनहस करदिया है, फलकार्कके मैदानमें खुली लड़ाईमें इङ्गलेण्ड नरेशका सामना किया और हारने पर जब उससे कहा गया कि क्षमा मांगकर शान्तिले तो उसने शान्ति लेनेसे इनकार किया था? इसी कारण वह तभीसे आईनके लाभसे वञ्चित किया गया है और उसने उसके बाद फिर इङ्गलेण्ड नरेशसे क्षमा मांगकर शान्ति नहीं ली इस लिये उसको सफाई पेश करने और अपना पक्ष समर्थन करनेका अधिकार देना इङ्गलेन्डके आईनके अनुसार बेकानूनी और अन्याय समझा जाता है इसलिये उसको वह अधिकार नहीं दिया जा सकता। अब उसे मृत्युकी सजाका हुक्म दिया जाता है और यह भी आज्ञा दी जाती

है कि उसका सिर उतार कर और अंग प्रत्यंग काटकर चारों ओर फेंके जायंगे। धन्य विचारक! धन्य तुम्हारी विचार प्रणाली! जैसा राजा वैसाही विचारक!

वध्यभूमिमें जानेके रास्ते के दोनों तरफ कतार बांधकर हथियार बन्द पुरुष खड़े थे पीछे पीछे बेशुमार आदमी दौड़ते थे। इस दशा में वालिस वध्यभूमिमें लाया गया। वालेसके चेहरे पर साहस और शान्ति बिराजमान थी। स्वदेशके लिये जान देनेमें वालेसके मनमें मानो अपार आनन्दकी लहरें उठ रही थीं। वालेसने एक पुरोहित या कनफेसर मांगा परन्तु एडवर्डने नहीं दिया और कहा कि जो कोई वालेसका यह काम करेगा उसे फांसी देदी जायगी। कन्टर-बरीके बिशप एडवर्डको धिक्कार देकर उनकी फांसीकी धमकीकी कुछ परवा न करके वालेसके कनफेसर हुए। राजाने फौरन उन को पकड़नेका हुक्म दिया मगर उनके साथी मंत्रियोंने समझा बुझाकर उन्हें ऐसा करनेसे रोका।

वालेसने बिशपके सामने जिन्दगीकी कहानी कुछ न छिपाकर सब 'कनफेस' की अर्थात् कह दी। घुटना टेक कर अपनी आत्मा ईश्वरमें अर्पण कर दिया। बिशप अगला दृश्य देखने की हिम्मत न करके वहांसे भाग गये। घातक इसके बाद उनको तिकठीके पास लेगये। उसके पैर अभी तक सख्त लोहेकी जञ्जीरमें बंधे हैं आज तीन दिनसे वह इसी हालतमें रखा गया है। वालिसने लार्ड क्लिफोर्डसे अपने सदाका साथी भजन ग्रन्थ मांगा। यह ग्रंथ कैद-खानेमें लेजानेके समय उसके कपड़े लत्तेके साथ काराध्यक्षको सौंप दिया गया था। तिकठीके फांसमें जब उसका सिर दिया गया तब उसने अपनी आंखोंके सामने वह ग्रन्थ रखनेको कहा। ग्रन्थ उसके सामने रखा गया। वह टकटकी लगा कर उनकी ओर देखने लगा। जब तक होश रहा तब तक माताके दिये हुए उस ग्रन्थकी तरफ भक्तिभावसे देखता रहा। इधर घाय-कोंने अपना काम पूरा कर डाला। आज इङ्गलेन्डकी वध्यभूमिमें

स्काटलेन्डके आकाशका चन्द्रमा राहु ग्रस्त हुआ! आज बरबरोंने वीररक्तसे उमड़ कर विकराल मूर्ति धारण की! आज इङ्गलेन्डकी छाती उस रुधिराग्निसे भस्म हुई! २३ वीं अगस्तको बड़ी क्रूरताके साथ यह वीरमेधयज्ञ समाप्त हुआ। अङ्गरेजोंने उस वीरका शरीर टुकड़े टुकड़े करके चारों ओर फेंका। सिर लन्दनके पुल पर और दायां हाथ न्यु कैसल पुलपर रखा गया। बायां हाथ बारविक, दायां पैर पार्थ और बायां पैर एडबर्डीनमें भेजा गया। इस तरह उस महावीर प्रातःस्मरणीय चरित स्काटिश स्वदेशहितैषीने स्वदेशके लिये स्वजातिके लिये—और अनन्तकाल तक मनुष्य जातिकी शिक्षाके लिये—आत्मोत्सर्ग किया। धन्य वालेस! धन्य तुम्हारा आत्मोत्सर्ग! पुण्यभूमि वही देश है जिस देशमें तुम्हारे जैसे पुण्यात्मा जन्म लेते हैं। धन्य वह जाति है—अपने जन्मसे तुम्हारे जैसे आदमी जिस जातिको कृतार्थ करते हैं!

जो सर्व संहारिणी मृत्यु दुनियाके किसी जीवको नहीं छोड़ती बुरे भलेका विचार नहीं करती उसने वालेसकी देवोपम गुणावली न सह कर असमय ही उसको अपने पेटमें लेलिया! मगर नादान! तेरी यह वृथा चेष्टा है! जो अपने अद्भुत आत्मोत्सर्गसे अमर हो गया है उसको पेटमें छिपा रखना तेरा काम नहीं है। तू मूर्ख है इससे उसका गला सड़ा घृणित स्थूल शरीर लेकर तृप्त होगई है! यह देख वालेस फड़कते हुए सूक्ष्म शरीरसे गुलामीसे पीड़ित मुर्देके समान करोड़ों मनुष्योंके शरीरमें जीवन डाल रहा है। हवाके प्रचण्ड झोंकेसे उसकी चिता-भस्मकी एक एक रेणु आगकी चिनगारीकी तरह सारी पृथिवी पर फैल रही है उसकी बिजली भरी चिनगारीको कृत्या यमकी दुधार है। वह चिनगारी जिसको छू जाती है वही अमरत्व पाजाता है। वह बिजली जिस शरीर में पैठजाती है वह फिर मरनेसे नहीं डरता। जिसको स्थूल शरीर से मोह है, स्थूल शरीर भोग्य है—भोगविलासमें आसक्ति है वही मौतसे डरता है! प्राणोत्सर्ग करनेवाले निष्काम योगी मौतको

डर नहीं जानते, कर्तव्य पालनके लिये मौतको प्यारी पत्नीके समान गले लगाते हैं। इसीसे घातकोंकी नंगी तलवार देख कर भी वालेसका मुंह मलिन नहीं हुआ; वह जननी जन्मभूमिके लिये स्थूल शरीर छोड़ता है यह सोच कर आनन्दमें मग्न होगया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग टुकड़े टुकड़े कराके चारों तरफ फेंकवा कर एडवर्डने केवल अपनी क्रूरता दिखाई! इससे वालेसकी कीर्ति सदाके लिये अमर होगई और एडवर्डके यशरूपी चन्द्रमामें सदाके लिये कलङ्क लग गया!

इति।